mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-04 अंक-182 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

सतना
02 जुलाई 2024 मंगलवार

दैनिक मीडिया ऑडीटर

दैनिक मीडियाऑडीटर

सतना, रीवा से एक साथ प्रकाशित

हार्दिक पंड्या...
@ पेज 7

संक्षिप्त समाचार

आजादी के 77 साल बाद देश में न्याय व्यवस्था हुई स्वदेशी

- 3 नए आपराधिक कानूनों पर शाह ने कहा-अब दंड की जगह न्याय मिलेगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश में अंग्रेजों के जमाने से चल रहे कानूनों की जगह 3 नए कानून भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता और भारतीय साक्ष्य अधिनियम 1 जुलाई से लागू हो गए हैं। इन्हें आईपीसी (1860), सीआरपीसी (1973) और एविडेंस एक्ट (1872) की जगह लाया गया है। कानूनों के लागू होने के बाद गृह मंत्री अमित शाह ने मीडिया को इन कानूनों की जानकारी दी। शाह ने कहा

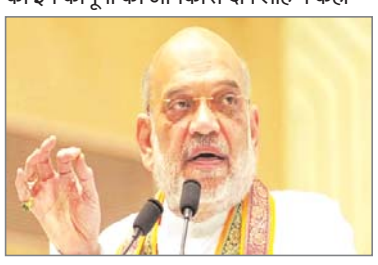

कि आजादी के 77 साल बाद क्रिमिनल जस्टिस सिस्टम अब पूरी तरह से स्वदेशी हो गया है। शाह बोले- अब दंड की जगह न्याय मिलेगा। मामलों में देरी की जगह स्पीडी ट्रायल होगा। साथ ही सबसे आधुनिक क्रिमिनल जस्टिस सिस्टम बनेगा। गृहमंत्री के मुताबिक देशभर में 22.5 लाख से ज्यादा पुलिसकर्मियों को नए क्रिमिनल जस्टिस सिस्टम की ट्रेनिंग 12 हजार से ज्यादा मास्टर ट्रेनर्स ने दी है। लोकसभा में 9.29 घंटे चर्चा हुई, उसमें 34 सदस्यों ने भाग लिया। राज्यसभा में 6 घंटे से ज्यादा चर्चा हुई। इसमें 40 सदस्यों ने भाग लिया। शाह ने कहा कि यह भी झूठ है कि विधेयक को सांसदों को बाहर भेजे जाने के बाद लाया गया।

अफगानिस्तान पर हुई यूएन की बैठक में शामिल हुआ भारत

- तालिबान के नेता मौजूद रहे,यूएन ने सफाई दी-मीटिंग का मकसद मान्यता देना नहीं

काबुल (एजेंसी)। कतर की राजधानी दोहा में रविवार को अफगानिस्तान को लेकर संयुक्त राष्ट्र संघ की एक बैठक हुई। इसमें भारत समेत 25 देश शामिल हुए। साथ ही ऐसा पहली बार हुआ जब तालिबान के नेता अफगानिस्तान पर चर्चा के दौरान मौजूद रहे हों। इससे पहले वे

यूएन की हर उस बैठक का बहिष्कार करते रहे हैं जिनमें अफगानिस्तान पर चर्चा की गई हो। हालांकि,यूएन ने स्पष्ट कर दिया था कि इस बैठक का मकसद तालिबान को मान्यता देना नहीं है। इसके बावजूद कई मानवाधिकार संगठनों ने मीटिंग की आलोचना की और सवाल उठाए। इन संगठनों की मांग है कि जब तक तालिबान महिलाओं के अधिकारों का हनन करता रहेगा तब तक न तो उससे बात की जाए और न उन्हें मान्यता मिले। अफगानिस्तान पर हुई यूएन की मीटिंग में भारत की तरफ से विदेश मंत्रालय के अधिकारी जेपी सिंह शामिल हुए। हालांकि, इस वक्त विदेश मंत्री एस जयशंकर भी दोहा में थे पर वे बैठक में नहीं गए। भारत अभी तालिबान के मामले में फूंक-फूंक कर कदम रख रहा है।

देश में खुद को हिंदू कहने वाले दिन-रात हिंसा करते हैं: राहुल

- शिव की तस्वीर दिखाकर नेता प्रतिपक्ष बोले-भाजपा हिंसा कराती है,ये हिंदू नहीं
- पीएम ने कहा-हिंदू समाज को हिंसक कहना गंभीर,शाह बोले-माफी मांगें

राहुल गांधी के बयान पर लोकसभा में जबरदस्त हंगामा,बीजेपी हमलावर

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस पार्टी के पूर्व अध्यक्ष और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने बहुत विवादित बयान दिया है। ऐसा बयान जो करोड़ों हिंदुओं की भावना को आहत करने वाला है। उन्होंने कहा कि जो लोग अपने आपको हिंदू कहते हैं, वो चौबीसों घंटे हिंसा, हिंसा, हिंसा; नफरत, नफरत, नफरत; असत्य, असत्य, असत्य करते हैं। राहुल के इस बयान पर लोकसभा में भारी हंगामा हो गया। खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने खड़े होकर राहुल के इस विचार पर आपत्ति जताई। हालांकि, जवाब में राहुल गांधी ने कहा कि उन्होंने पीएम मोदी, बीजेपी और आरएसएस को नफरती और हिंसक कहा है, ना कि पूरे हिंदू समाज को। प्रधानमंत्री मोदी ने राहुल के बयान पर आपत्ति जताते हुए सिर्फ इतना कहा था, ये विषय बहुत गंभीर है। पूरे हिंदू समाज को हिंसक कहना ये गंभीर विषय है। इतने पर राहुल गांधी बोलने लगे, नरेंद्र मोदी पूरे हिंदू समाज नहीं हैं। आरएसएस पूरा हिंदू समाज नहीं है। हंगामे के बीच गृह मंत्री अमित शाह खड़े हुए और राहुल गांधी से माफी की मांग की। उन्होंने कहा, शोर-शराबा करके इतने बड़े वाकये को छिपाया नहीं जा सकता। विपक्ष के नेता ने कहा है कि जो अपने आप को हिन्दू कहते हैं, वो हिंसा करते हैं। मैं फिर से दोहराता हूं कि जो अपने आप को हिन्दू कहते हैं, वो हिंसा की बात करते हैं। हिंसा करते हैं। शाह ने कहा, इस देश में शायद इनको मालूम नहीं है कि करोड़ों लोग अपने आपको गर्व से हिन्दू कहते हैं। क्या वो सभी लोग हिंसा की बात करते हैं। हिंसा की भावना को किसी धर्म से जोड़ना ठीक नहीं। संवैधानिक पद पर बैठे राहुल से गुजारिश है कि माफी मांगें। इस्लाम में अभय मुद्रा पर विद्वानों और गुरुनानक पर एसजीपीसी से मत ले लें।

जेल में बंद कश्मीरी सांसद को मिली राहत

- लोकसभा में शपथ लेने पर एनआईए ने जताई सहमति

नई दिल्ली (एजेंसी)। एनआईए ने कश्मीरी नेता और लोकसभा चुनाव में जीते निर्दलीय सांसद राशिद इंजीनियर को 5 जुलाई को संसद में शपथ लेने की अनुमति देने पर सहमत दे दी है। एनआईए के वकील ने दिल्ली की

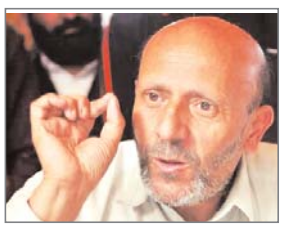

अदालत में कहा जेल में बंद कश्मीरी नेता राशिद को मीडिया से बात न करने जैसी शर्तों के आधार पर संसद में सांसद के तौर पर शपथ लेने की अनुमति देनी चाहिए। एनआईए द्वारा कहा गया है कि सहमति शर्तों पर ही निर्भर है। इस मामले में कल दिल्ली की पटियाला कोर्ट आदेश जारी कर सकता है।

होटल में बंद खिलाड़ी

लाइन में लगकर कर रहे डिनर

- बेरिल चक्रवात की वजह से बारबाडोस में फंसी टीम इंडिया

बारबाडोस (एजेंसी)। टी20 वर्ल्ड कप जीतने वाली भारतीय टीम बारबाडोस में फंस गई है। टीम को एक जुलाई को वहां से रवाना होना था लेकिन ब्रिजटाउन में एयरपोर्ट बंद कर दिया गया है। यह सब चक्रवात की वजह से हो रहा है। हेरिकेन बेरिल काफी खतरनाक हो गया है। यह कैटेगरी चार में तब्दील हो चुका है। अगले कुछ घंटों में यह बारबाडोस से टकरा सकता है और वहां लगातार बारिश भी हो रही है। भारतीय टीम के सभी खिलाड़ी पूरी तरह होटल में पैक हो चुके हैं। किसी को भी बाहर जाने की अनुमति नहीं है। रेवस्पोर्ट्स की रिपोर्ट के अनुसार होटल में भी लिमिटेड स्टाफ ही हैं। भारतीय खिलाड़ियों को कतार में लगकर पेपर की प्लेट में डिनर करना पड़ा है। बारबाडोस में कर्फ्यू जैसा माहौल हो गया है। अभी किसी को पता नहीं है कि क्या होने वाला है। टीम इंडिया के आने पर भी कोई अपडेट नहीं है। वाशिंगटन पोस्ट के अनुसार, बेरिल के 130 मील प्रति घंटे से अधिक की गति से विंडवार्ड द्वीप समूह से टकराने की आशंका है। तूफानी लहर और भारी बारिश का अनुमान लगाया है।

भारत ने बनाया दुनिया का 'सबसे तगड़ा' विस्फोटक

- ब्रह्मोस वाले से भी ज्यादा घातक, दुनिया में मचेगी खरीदने की होड़
- मेक इन इंडिया अभियान के तहत निर्मित सेबे स-2 का सफल परीक्षण

नई दिल्ली (एजेंसी)। रक्षा उत्पादन के क्षेत्र में भारत लगातार नए-नए आयाम हासिल कर रहा है। ताजा उपलब्धि से न केवल भारतीय सेना की मारक क्षमता में भारी इजाफा होने जा रहा है बल्कि रक्षा निर्यात के क्षेत्र को भी पंख लगने की पूरी उम्मीद है। यह उपलब्धि बेहद घातक विस्फोटक बनाने में हासिल हुई है। भारत ने सेबेक्स 2 नामक विस्फोटक तैयार कर इसका सफल परीक्षण भी कर लिया है। इस विस्फोटक के बारे में इतना कहा जा सकता है कि यह परमाणु आधारित नहीं है, लेकिन इसकी विनाशकारी क्षमता बहुत अधिक है। कोई विस्फोटक कितना घातक है, इसका आकलन टीएनटी (ट्राइनाइट्रोटोलुइन) के आधार पर किया जाता है। टीएनटी एक मानक है जिसके अनुसार तय होता है कि किसी विस्फोटक में कितनी तबाही करने की क्षमता है। इस पैमाने पर सेबेक्स 2 की क्षमता दोगुने से भी थोड़ा ज्यादा है। भारत के सेबेक्स 2 का परफॉर्मेंस इतना हाई है कि यह दुनिया के सबसे शक्तिशाली गैर-परमाणु विस्फोटकों में से एक बन गया है। नौसेना ने सेबेक्स 2 का व्यापक परीक्षण करने के बाद इसके इस्तेमाल के लिए ओके कर दिया

है। नई विधि से तैयार विस्फोटक सेबेक्स 2 की खासियत यह है कि यह बिना वजन बढ़ाए बम, तोपखाने के गोले और वॉरहेड्स की विनाशकारी शक्ति में जबर्दस्त वृद्धि के साथ क्रांति लाने में सक्षम है। इसी वजह से इसकी पूरी दुनिया में मांग हो सकती है। यानी, भारत के लिए रक्षा उत्पादन के क्षेत्र में एक नया बाजार खुलने जा रहा है। दरअसल, दुनिया भर की ताकतें मौजूदा हथियार प्रणालियों को ज्यादा से ज्यादा घातक बनाने में जुटी हुई हैं। नौसेना ने सेबेक्स 2 का मूल्यांकन, परीक्षण और प्रमाणन रक्षा निर्यात संवर्धन योजना के तहत किया है। अधिकारियों ने कहा, विस्फोटक के विकास से इस्तेमाल में आने वाले हथियारों और गोला-बारूद की क्षमता एवं दक्षता बढ़ेगी। उन्होंने कहा कि फाइनल सर्टिफिकेशन पिछले सप्ताह पूरा हो गया था। जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है कि जितनी ज्यादा टीएनटी, विस्फोटक उतना ही घातक होता है। भारत में अभी इस्तेमाल किया जा रहा सबसे शक्तिशाली पारंपरिक विस्फोटक ब्रह्मोस मिसाइल के वॉरहेड में इस्तेमाल हो रहा है। यह लगभग 1.50 के टीएनटी का है। वहीं, दुनिया भर में पारंपरिक वॉरहेड में इस्तेमाल किए जाने वाले अधिकांश विस्फोटकों की टीएनटी तुल्यता 1.25-1.30 होती है। सूत्रों ने बताया कि इकोनॉमिक एक्सप्लोसिव्स लिमिटेड (ईईएल) ने मेक इन इंडिया पहल के तहत विस्फोटक सेबेक्स 2 को तैयार किया है।

भारत से बढ़ी 'दूरी' तो टेंशन में आया अपना दोस्त रूस

पीएम मोदी की यात्रा से बदलेंगे रिश्ते! दुनिया की टिकी नजर

यूक्रेन युद्ध के बाद पहली बार रूस यात्रा पर जा रहे पीएम मोदी

मास्को (एजेंसी)। यूक्रेन युद्ध के बाद पहली बार पीएम मोदी रूस की यात्रा पर जा रहे हैं। पीएम मोदी 8 और 9 जुलाई को रूस में रहेंगे और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से मुलाकात करेंगे। पुतिन और मोदी इस मुलाकात के दौरान रणनीतिक, आर्थिक और सैन्य संबंधों पर जोर दे सकते हैं। विशेषज्ञों के मुताबिक पीएम मोदी का यह दौरा ऐसे समय पर हो रहा है जब दोनों देशों के बीच रिश्तों में 'दूरी' बढ़ रही है। पीएम मोदी और पुतिन भारत और रूस के बीच व्यापार पर बात कर सकते हैं जो तेल के आयात की वजह से बहुत बढ़ गया है। भारत और रूस पेमेंट के मुद्दे को आसान बनाने पर बात कर सकते हैं जो पश्चिमी प्रतिबंधों की वजह से फंसा हुआ है। रूस और चीन की दोस्ती बढ़ रही है, यह भी भारत के लिए चिंता का विषय है। पीएम मोदी साल 2015 के बाद पहली बार मास्को पहुंच रहे हैं। इसे भारत और रूस के बीच दशकों से हो रहे वार्षिक शिखर सम्मेलन की फिर से शुरुआत माना जा रहा है। पीएम मोदी ने साल 2017, 2018, 2019 में रूस की यात्रा की थी।

निचली अदालत में लगे झटके के बाद हाईकोर्ट पहुंचे केजरीवाल

- गिरफ्तारी को बताया अवैध,निचली अदालत के फैसले को दी चुनौती

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के कथित शराब घोटाले के मामले में मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल तिहाड़ जेल में बंद हैं और उन्हें पिछले दिनों ही जेल से ही सीबीआई ने भी गिरफ्तार किया है, जिसके

बाद कोर्ट ने उन्हें 12 दिनों की न्यायिक हिरासत पर भेज दिया गया है। अब निचली अदालत के फैसले को सीएम केजरीवाल ने दिल्ली हाई कोर्ट में चुनौती दी है। केजरीवाल ने अपने ऊपर लगाए गए आरोपों को बेबुनियाद बताते हुए हाई कोर्ट में सीबीआई की गिरफ्तारी को अवैध भी बताया है। दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल ने अपनी याचिका में गिरफ्तारी को अवैध बताया है।

एमवीए साथ मिलकर लड़ेगा महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव

शरद पवार बोले-गठबंधन की छोटी पार्टियों संग आगे बढ़ेंगे

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र में इस साल के अंत में विधानसभा चुनाव हैं। इंडिया ब्लॉक में शामिल कांग्रेस, एनसीपी (शरद) और शिवसेना (यूबी) महाराष्ट्र में महा विकास अघाड़ी में भी शामिल हैं। रविवार को एनसीपी (शरद) प्रमुख शरद पवार ने कहा कि कांग्रेस, शिवसेना (यूबी) और उनकी पार्टी मिलकर इस साल अक्टूबर में होने वाले महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव लड़ेंगी। पवार ने यह भी कहा कि महाराष्ट्र में प्रमुख विपक्षी दलों की नैतिक जिम्मेदारी है कि वे राज्य विधानसभा चुनावों में छोटे सहयोगियों के हितों की रक्षा करें, जो 2024 के लोकसभा चुनावों में गठबंधन का हिस्सा थे। वहीं, महाराष्ट्र में एनडीए की महायुति वाली सरकार के 2 साल पूरे होने पर राज्य के सीएम एकनाथ शिंदे पोस्ट शेयर कर खुशी जाहिर की। उन्होंने बालासाहेब ठाकरे का जिक्र किया। पवार ने कहा- विपक्ष महाराष्ट्र के लोगों के सामने एक सामूहिक चेहरा रखेगा। राज्य में बदलाव की जरूरत है और इसे पूरा करना विपक्षी गठबंधन की नैतिक जिम्मेदारी है। शरद पवार ने आगे कहा कि महाभारत में अर्जुन का लक्ष्य मछली की

आंख थी, इसलिए हमारी नजरें महाराष्ट्र में होने वाले चुनावों पर टिकी हैं। कांग्रेस, एनसीपी और शिवसेना मिलकर विधानसभा चुनाव लड़ेंगी। सीटों के बंटवारे पर बातचीत शुरू नहीं हुई है, लेकिन जल्द ही शुरू होगी।

एंड्रॉयड फोन मंदिर में नहीं ले जा सकेंगे, 5-5 घंटे की होगी शिट

पीतांबरी चौबंदी, सिर पर साफा..नई ड्रेस में रामलला के पुजारी

अयोध्या (एजेंसी)। अयोध्या में रामलला के पुजारियों के लिए सोमवार 1 जुलाई से ड्रेस कोड लागू हो गया। मुख्य पुजारी, 4 सहायक पुजारी और 20 ट्रेनी पुजारी एक खास परिधान में दिखेंगे। अब तक गर्भगृह में पुजारी केसरिया रंग के कपड़ों में दिखते थे। सिर पर केसरिया साफा, कुर्ता और धोती पहनते थे, लेकिन राम मंदिर ट्रस्ट ने इसमें बदलाव किया है। अब पुजारियों को पीतांबरी (पीली) चौबंदी के साथ धोती और सिर पर साफा बांधना होगा। राम मंदिर के सहायक पुजारी संतोष कुमार तिवारी ने कहा- धर्मशास्त्रों के अनुसार, पुजारियों को ऐसे वस्त्र नहीं पहनने चाहिए, जिनमें पांव या सिर डालना हो। इसलिए नया ड्रेस कोड लागू किया गया है। संतोष तिवारी ने ये भी बताया- पहले पुजारी सामान्य धोती-कुर्ता, कुर्ता-पायजामा पहनकर आ जाते थे। साफा (पगड़ी) और पीतांबरी (पीली) भी पहनते थे, लेकिन यह अनिवार्य नहीं था। नए ड्रेस कोड को राम मंदिर की पूजा में एकरूपता लाने के लिए लागू किया गया। इससे वरिष्ठ पुजारी आचार्य सत्येंद्र दास भी सहमत थे। रामलला के दरबार में 1 जुलाई से पुजारी

एंड्रॉयड फोन नहीं ले जाएंगे। संतोष तिवारी ने बताया- राम मंदिर ट्रस्ट ने सुरक्षा कारणों से यह निर्णय लिया है। दरअसल, हाल के दिनों में राम मंदिर परिसर के अंदर से कुछ ऐसी तस्वीरें सामने आई थीं, जिसको लेकर काफी हो-हल्ला मचा था। उनमें से एक पानी टपकने की तस्वीर भी शामिल थी। हालांकि, बाद में इस पर मंदिर ट्रस्ट की सफाई भी आई, जिसमें बताया गया था कि जिस जगह पर रामलला विराजमान हैं। वहां पर एक बूंद भी पानी नहीं गिरा। राम मंदिर ट्रस्ट सहायक पुजारियों को हर महीने 32 हजार रुपए तनख्वाह देता है। अभी मंदिर में एक मुख्य पुजारी के साथ 4 सहायक पुजारी हैं। हर सहायक पुजारी के साथ 5 ट्रेनी पुजारी सेवा करेंगे। इनकी सेवा सुबह 3.30 बजे से रात 11 बजे तक होगी। इनमें से पुजारियों की हर टीम को 5 घंटे की सेवा देनी होगी। यह नियम भी 1 जुलाई से लागू कर दिया गया है। रामलला की भोग आरती दोपहर 12 बजे होगी। संध्या आरती शाम 7.30 बजे और भोग आरती 8 बजे होगी। रामलला की शयन आरती रात 10 बजे होगी, जिसके बाद गर्भगृह के पट बंद कर दिए जाएंगे।

संक्षिप्त समाचार

अमरकंटक ताप विद्युत गृह की यूनिट नंबर 5 ने बनाया लगातार 300 दिन विद्युत उत्पादन करने का नया रिकार्ड

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश पावर जनरेटिंग कंपनी के अमरकंटक ताप विद्युत गृह चचाई के अभियंताओं व कार्मिकों के समर्पण, कड़ी मेहनत और प्रतिबद्धता ने 210 मेगावाट स्थापित क्षमता की यूनिट को लगातार 300 दिन तक संचालित करने में सफलता हासिल की है। यह विद्युत यूनिट की स्थापना के बाद सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। इस यूनिट ने 27 अगस्त 23 से 22 जून 2024 तक 300 दिन सतत् विद्युत उत्पादन करने का नया रिकार्ड बनाया। 210 मेगावाट की यूनिट ने जब 300 दिन सतत् विद्युत उत्पादन करने का कीर्तिमान अर्जित किया तब इसने विभिन्न मापदंडों में भी उल्लेखनीय प्रदर्शन किया। यूनिट ने 100.24 फीसदी प्लांट उपलब्धता फेक्टर (पीएएफ), 98.6 फीसदी प्लांट लोड फेक्टर (पीएलएफ) व 9.29 प्रतिशत ऑक्जलरी कंजम्पशन की उपलब्धि हासिल की। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर, अपर मुख्य सचिव ऊर्जा श्री मनु श्रीवास्तव व मध्यप्रदेश पावर जनरेटिंग कंपनी के प्रबंध संचालक श्री मनजीत सिंह ने अमरकंटक ताप विद्युत गृह के यूनिट नंबर 5 के अभियंताओं व कार्मिकों को बधाई दी है। उन्होंने कार्मिकों की सराहना करते हुए कहा कि समर्पण, कड़ी मेहनत व प्रतिबद्धता से लक्ष्य अर्जित करने का यह सर्वश्रेष्ठ व अनुकरणीय उदाहरण है।

भारतीय न्याय व्यवस्था के इतिहास में आज का दिन गौरवशाली -उप-मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उप-मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल ने कहा है कि भारतीय न्याय व्यवस्था के इतिहास में आज का दिन गौरवशाली है। तीन नए कानून भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता और भारतीय साक्ष्य अधिनियम आज से लागू हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह तीनों कानून भारतीय चेतना एवं मूल्यों पर आधारित हैं। उप-मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी एवं केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह का आभार व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि ब्रिटिश राज के औपनिवेशिक अपराध कानूनों का दौर खत्म हो गया।

प्रधानमंत्री श्रमयोगी मानधन योजना में 60 वर्ष बाद मिलेगी 3 हजार रूपए पेंशन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। केन्द्र सरकार द्वारा असंगठित श्रमिकों की सामाजिक सुरक्षा को दृष्टिगत रखते हुए केन्द्रीय श्रम मंत्रालय द्वारा प्रधानमंत्री श्रम योगी मानधन पेंशन योजना प्रारंभ की गई है। योजना के अंतर्गत 18 से 40 वर्ष आयु वर्ग के समस्त असंगठित क्षेत्र के श्रमिक जिनकी मासिक आय 15 हजार से कम है, इस योजना के लिए पात्र होंगे। योजना के अंतर्गत नामांकन के लिए 18 से 40 वर्ष आयु वर्ग के श्रमिकों को प्रतिमाह 55 से 200 रूपये प्रीमियम के रूप मे जमा करना होगी। भारत सरकार श्रम मंत्रालय द्वारा जमा की जाएगी जिसमें 50 प्रतिशत प्रीमियम की राशि भारत सरकार श्रम मंत्रालय द्वारा वहन की जाएगी। श्रमिक की 60 वर्ष आयु पूर्ण होने पर बीमित व्यक्ति को 3 हजार प्रतिमाह रूपए पेंशन के रूप में प्राप्त होगी।

सीमंधर जिनालय का 26वां वार्षिकोत्सव

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। सीमंधर जिनालय का 26वां वार्षिकोत्सव धूमधाम से मदनलाल जैनमति बाई धर्मशाला में आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर सोमवार सुबह 6 बजे भगवान जिनेन्द्र का अभिषेक व शांति जाप किया गया। इसके बाद सिद्ध चक्र मंडल विधान का शुभारंभ सुबह 6.30 बजे किया गया। सिद्ध भगवान की आराधना भक्ति करते हुए 224 वर्ग चढ़ाए गए। इसके बाद नित्य नियम पूजन अर्चन किया गया। इस अवसर पर इंद्र इंद्राणियों द्वारा उत्साह पूर्वक भक्ति नृत्य भी किया गया। समिति के प्रवक्ता अरुण वर्धमान ने बताया कि रविवार को शांति जाप, भगवान जिनेन्द्र का अभिषेक, जिनवाणी व मंगल कलश की स्थापना, शास्त्र प्रवचन सहित अन्य धार्मिक कार्यक्रम विधानाचार्य पंडित सुनील धवल, पंडित अनिल शास्त्री, दीपक जैन के सानिध्य में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का समापन 7 जुलाई को किया जाएगा। इस अवसर पर पंचायत कमेटी के महामंत्री मनोज आरएम, कस्तूरचंद सिलवानी, मदन मस्त, राकेश दिवाकर सहित अन्य गणमान्य नागरिक मौजूद रहे।

डॉक्टरों ने किया पौधारोपण

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस के अवसर पर सम्भावना ट्रस्ट क्लिनिक भोपाल के डॉक्टरों ने रविवार को अन्य अस्पतालों और क्लिनिक के डॉक्टरों के साथ औषधीय वृक्षों के पौधे लगाए। डॉक्टरों द्वारा सम्भावना के औषधीय बगीचे में अमलतास के पांच पौधे लगाए गए। कार्यक्रम के अंत में डॉक्टरों को सम्भावना के बगीचा कर्मियों द्वारा तुलसी के पौधे भेंट किए गए। इस अवसर पर एकत्रित डॉक्टरों ने चिकित्सा देखभाल में औषधीय पौधों और पेड़ों के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आधुनिक चिकित्सा और आयुर्वेद दोनों के डॉक्टरों को पौधों के औषधीय उपयोगों पर वैज्ञानिक ज्ञान में हुई प्रगति से लाभ उठाने में सक्षम होना चाहिए।

प्रदेश में 1 से लेकर 15 जुलाई के बीच अलग-अलग जिलों में किया जायेगा पौधरोपण

एक पेड़ मां के नाम अभियान

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने एक पेड़ मां के नाम अभियान चलाया है। प्रदेश में 1 जुलाई से लेकर 15 जुलाई के बीच अलग-अलग जिलों में इस अभियान को चलाया जायेगा। भोपाल जिले ने 20 लाख पौधे लगाने का लक्ष्य लिया है। इसी अभियान के अंतर्गत एक दिन में 6 जुलाई को लगभग 12 लाख से अधिक पौधे लगाने का लक्ष्य तय किया है। ऐसे कार्यों से ही पर्यावरण का माहौल बनता है। ऐसे में पौधारोपण कर न केवल हम पर्यावरण को बचाएंगे बल्कि वानिकीकरण में भी अपनी भूमिका निभाएंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव की मंशानुसार एवं पर्यावरण को बचाने एवं इस अभियान में जन-जन की भागीदारी से विशाल लक्ष्य को हासिल किया जाएगा। कलेक्टर श्री कौशलेंद्र विक्रम सिंह ने सोमवार को अभियान के संबंध में बैठक लेकर सभी संबंधित विभागों के अधिकारियों के साथ दिए गए लक्ष्य के अनुसार तैयारियों की समीक्षा की। वन मंडल अधिकारी भोपाल द्वारा बताया

कि वन विभाग भोपाल द्वारा आगामी 6 जुलाई को 9 लाख से अधिक वृक्षारोपण किया जाएगा। जिसके वन विभाग विगत तीन माह से तैयारियां कर रहा है। वन विभाग द्वारा 9 लाख से अधिक गड्ढों की खुदाई एवं अन्य तैयारियों के साथ फेंसिंग की जा चुकी है। सभी चिन्हित स्थानों पर पौधों को पहुँचाया जा रहा है। नगर निगम भोपाल द्वारा 300 से अधिक स्थानों पर एक लाख 20 हजार से अधिक पौधारोपण किया जाएगा। जिसके लिए चयनित स्थानों पर पौधों के लिए गड्ढों की खुदाई, ट्री गार्ड की व्यवस्था, पौधों के ट्रांसपोटिंग की व्यवस्था एवं आगामी 6 जुलाई को अलग - अलग स्थानों पर सांसद, विधायकगण एवं अन्य जनप्रतिनिधियों द्वारा किए जाने वाले वृक्षारोपण की तैयारियों की जानकारी ली।

भोपाल ग्रामीण क्षेत्र के फंदा एवं बैरसिया ब्लॉक में 55-55 हजार पौधारोपण जिला पंचायत भोपाल द्वारा किया जाएगा। इसके साथ ही अन्य विभागों के द्वारा की जाने वाली तैयारियों की समीक्षा की। कलेक्टर श्री सिंह ने सभी भोपाल वासियों से इस अभियान से जुड़ने की अपील की। उन्होंने कहा कि आप अपने परिजन को लेकर, माता जी को साथ लेकर सेल्फी लें। अगर माता जी नहीं हैं तो उनके चित्र के साथ एक पौधा लगाकर सेल्फी ले सकते हैं। अभियान के अंतर्गत निर्धारित वेबसाइट पर भी चित्र अपलोड किया जा सकता है। इससे अन्य लोग प्रेरित होंगे।

मप्र के सभी टाइगर रिजर्व बंद, अब 1 अक्टूबर को खुलेंगे

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्य प्रदेश के सभी 6 टाइगर रिजर्व बांधवगढ़, कान्हा, पेंच, सतपुड़ा, पन्ना और संजय धुबरी को एक जुलाई से पर्यटकों के लिए बंद कर दिया गया है। हालांकि कुछ टाइगर रिजर्व के बफर जोन में टाइगर सफारी पहले ही तरह ही संचालित होती रहेगी। नेशनल पार्क या टाइगर रिजर्व के कोर जोन में पर्यटक नहीं जा सकेंगे। नेशनल पार्कों और टाइगर रिजर्व में तीन महीने तक पर्यटकों के लिए यह पाबंदी लागू रहेगी। जो एक अक्टूबर को खुलेगी। दरअसल, यह मौसम में बाघ और बाघिन के लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है वह इस इस मौसम में एकांतवास में साथ रहते हैं और उनके एकांतवास में कोई खलल हो तो वह खूंखार हो जाते हैं। जिस वजह से नेशनल पार्क बंद करने पड़ते हैं। मध्यप्रदेश में बांधवगढ़ सहित अन्य टाइगर रिजर्व के बफर जोन में सफारी जारी रहेगी और बफर में घूमने वाले टूरिस्ट बारिश के दौरान सफारी का आनंद ले सकते हैं। गौरतलब है कि बारिश के दौरान बाघ और बाघिन संसर्ग करते हैं

और इस दौरान वे एकांत में रहना पसंद करते हैं। यही कारण है कि बारिश के दौरान दो से तीन माह के लिए पार्क बंद कर दिए जाते हैं। इसके अलावा बारिश के दौरान पार्क या अभयारण्य के कच्चे रास्तों पर वाहन चलाना काफी मुश्किल भरा हो जाता है। जंगल के अंदर वाहनों के कच्चे रास्तों में फंसने से किसी तरह का कोई हादसे का खतरा बढ़ जाता है।

विद्यार्थियों का तीन तक यूजी और सात तक पीजी में होगा प्रवेश

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रदेश के यूजी-पीजी पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए दूसरे चरण की प्रवेश प्रक्रिया जारी है।प्रदेश के 1,314 सरकारी व निजी कालेजों में यूजी-पीजी की 10.32 लाख सीटों पर प्रवेश लिया जा रहा है।पहले राउंड में अब तक यूजी व पीजी में करीब सवा लाख विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया है। इसमें यूजी में 90 हजार प्रवेश हुए है। वहीं पीजी में 17 हजार विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया है। वहीं इस साल पीजी में प्रवेश की गति धीमी है।यूजी में चौथा वर्ष आनर्स पाठ्यक्रम शुरू होने के कारण पीजी में काफी कम प्रवेश हो रहे हैं।पीजी कोर्सेस एमए, एमएससी, एमकॉम में प्रवेश के लिए सीट आवंटन जारी किया है।यह आवंटन द्वितीय चरण की काउंसलिंग के तहत जारी किया गया है।विभाग ने प्रदेशभर के सरकारी और निजी कालेजों के लिए पीजी पाठ्यक्रमों में 32 हजार 54 विद्यार्थियों को सीट आवंटन पत्र जारी किए हैं। पहले चरण में 30 हजार 991 विद्यार्थियों को सीट आवंटित की गई थी।दोनों चरण को मिलाकर 63 हजार 45

छात्रों को सीट आवंटित की जा चुकी है। पीजी में द्वितीय चरण में जिन विद्यार्थियों को सीट आवंटन पत्र जारी किए गए हैं।उन्हें सात जुलाई तक फीस का भुगतान कर प्रवेश को सुनिश्चित करना होगा।यदि कोई विद्यार्थी सीट आवंटन से खुश नहीं है और पसंदीदा कालेज में सीट नहीं मिली है तो वे सात जुलाई तक ही सीट अपग्रेड के लिए आवेदन कर सकते हैं।यह सीट अपग्रेडेशन का आखिरी मौका है। इन्हें 11 जुलाई को सीट आवंटित की जाएगी। जिन्हें 13 जुलाई तक प्रवेश लेना होगा।

मप्र बोर्ड के नौवीं कक्षा में नामांकन के लिए आईडी जरूरी, 30 सितंबर तक होंगे नामांकन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मप्र माध्यमिक शिक्षा मंडल (माशिमे) ने नौवीं में विद्यार्थियों के नामांकन में समग्र की अनिवार्यता को इस बार फिर से कर दिया है। आनलाइन नामांकन आवेदन में अब टीसी रजिस्टर के आधार पर भरी गई जानकारी के आधार और समग्र आईडी में उल्लेखित जानकारी के आधार पर नामांकन होंगे। नौवीं के विद्यार्थियों के नामांकन आवेदन-पत्र भरने की अंतिम तिथि 30 सितंबर तक है। वहीं विलंब शुल्क के साथ 30 नवंबर तक आवेदन कर सकते हैं। इस संबंध में माशिमं ने प्रवेश नीति में दिशा- निर्देश जारी कर दिए हैं। दरअसल माशिम ने शैक्षणिक सत्र 2023-24 में नौवीं कक्षा के नामांकन के लिए

समग्र आईडी को अनिवार्य नहीं किया था। इसमें आधार कार्ड भी ईकेवायसी करना है, जबकि सरकारी स्कूलों में ग्रामीण क्षेत्र के लाखों की संख्या में विद्यार्थियों के नामांकन व आधार कार्ड में गलती थी। इस कारण पिछले साल समग्र आईडी की अनिवार्यता को समाप्त किया था। मंडल ने इसमें सुधार के लिए स्कूल प्राचार्यों को अधिकृत भी किया।

इसके बावजूद इसके नियमों के कारण इनमें सुधार हो पाना संभव नहीं हो पा रहा था। ऐसे परेशान कई सरकारी स्कूल के प्राचार्यों ने मंडल सचिव को पत्र लिखा था। इसके बाद मंडल सचिव ने समग्र की अनिवार्यता को समाप्त कर दिया था। लेकिन फिर से डाटा मैच नहीं होने के कारण सत्र 2024-25 में समग्र आईडी को जरूरी कर दिया है। प्रत्येक विद्यार्थी का नामांकन आवेदन-पत्र भरते समय संबंधित छात्र की समग्र आईडी अंकित करना होगा। नौवीं के विद्यार्थी का एमपी आनलाइन के पोर्टल पर समग्र आईडी अंकित करते ही समग्र आईडी में दर्ज छात्र/ छात्रा की सभी जानकारियां जैसे छात्र का नाम, पिता का नाम, माता का नाम, जन्मतिथि आदि स्क्रीन पर प्रदर्शित होगी। प्रदर्शित जानकारी सही होने की स्थिति में सीधे नामांकन आवेदन-पत्र भरे जाएं और समग्र की आईडी की जानकारी में भिन्नता होने पर संस्था अभिलेख (स्कालर रजिस्टर/ टीसी) के अनुसार छात्र की जानकारी में सुधार/ संशोधन कर नामांकन आवेदन-पत्र भरे जाएंगे।

9 जुलाई से शुरू होंगे विवाह, 17 जुलाई से नहीं होंगे मांगलिक कार्य

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। जुलाई माह से एक बार फिर शहनाई गूंजने वाली है। 61 दिन बाद शुक्र देव के उदय के साथ शुभ मुहूर्त शुरू हो गए है। शादियों के लिए 9 जुलाई से शुभ मुहूर्त शुरू हो गए है। जुलाई में विवाह के लिए कुल 8 शुभ मुहूर्त हैं। इसके बाद नवंबर-दिसंबर माह को मिलाकर सिर्फ 17 शुभ लग्न हैं। 6 मई को गुरु अस्त हो चुके हैं। इस कारण मई और जून महीने में एक भी शुभ लग्न नहीं था। 3 महीने के लंबे अंतराल के बाद धन, वैभव, प्रेम, सौंदर्य और सुख-समृद्धि के कारक शुक्र ग्रह का उदय हो गया है। मिथुन राशि में शुक्र उदय होने के साथ ही मांगलिक कार्यों शुरू हो गए है। विवाह के लिए इस माह पहला मुहूर्त 9 जुलाई को रहेगा।

जुलाई से दिसंबर तक ये हैं मुहूर्त

इस वर्ष के जुलाई, नवंबर और दिसंबर महीनों में कई शुभ मुहूर्त बन रहे हैं। जुलाई में 9, 11, 12, 13, 14, 15 और 17 तारीख को शुभ मुहूर्त हैं। 17 जुलाई को देवशयनी एकादशी है। इसके बाद विवाह, गृह प्रवेश, मुंडन संस्कार आदि मांगलिक कार्य बंद हो जाएंगे। वहीं, नवंबर में 17, 18, 22, 23, 24, 25 और 26 तारीख को भी शुभ मुहूर्त बनेंगे।

आपकी एक क्लिक बदल सकती है शहर की रैंकिंग, स्वच्छता एप से हल होंगी 11 प्रकार की शिकायतें

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। आपकी एक क्लिक स्वच्छता में भोपाल की रैंकिंग सुधार सकती है। क्योंकि मिनिस्ट्री ऑफ हाउसिंग एंड अर्बन अफेयर्स का स्वच्छता एप नई व्यवस्था के साथ एक बार फिर शुरू हो गया है। अब इसमें 11 तरह की शिकायतें की जा सकेंगी, जिनका निराकरण सर्विस लेवल एग्रीमेंट (एसएलए) के तहत करना होगा। यानी हर शिकायत का समय निर्धारित है, यदि इस समय सीमा में निराकरण नहीं हुआ तो भोपाल के स्वच्छता सर्वेक्षण के दौरान नंबर कटेंगे। यदि भोपाल नगर निगम शिकायतों के निराकरण में खरा उतरा तो अकेले यही एप सर्वेक्षण में 100 नंबर दिलवा सकता है। इसकी एक खासियत और है। यदि आपको कहीं कोई गार्बेज

वल्नरेबल पॉइंट (जीवीपी) नजर आया, लेकिन उसके जोन या वार्ड का नंबर नहीं पता है। आप उस जीवीपी की तस्वीर फोन से क्लिक कर एप में अपलोड करें तो उस लोकेशन की जियो टैगिंग खुद ब खुद नजर आने लगेगी। लंबे समय से इस एप्लीकेशन में अपग्रेड हो रहा था। दो दिन पहले ही इसे लॉन्च कर दिया गया है। नगर निगम कमिश्नर हरेंद्र नारायण ने इस एप के जरिए आने वाली शिकायतों के निराकरण के लिए निर्देश दिए हैं। स्मार्ट सिटी में बने कंट्रोल रूम से अगले 35 दिन की नियमित निगरानी शुरू की जाएगी। निगम सूत्रों का कहना शिकायत बार-बार आती है तो इसे निगम की खामी माना जाएगा। ऐसे ही केंद्र में बैठी टीम को भोपाल में स्पॉट फाइन की कार्रवाई ज्यादा नजर आई तो भी नंबर कट सकते हैं। क्योंकि स्पॉट फाइन तभी होता है, जब शिकायतों का सही निराकरण न हो रहा हो।...तो री-ओपन करें शिकायतः आपकी पोस्ट की गई तस्वीर को संबंधित कर्मचारी को भेजा जाएगा। वे स्पॉट की साफ तस्वीर अपलोड करेंगे तभी शिकायत निराकृत मानी जाएगी।आप संतुष्ट नहीं हैं तो शिकायत को री-ओपन भी कर सकते हैं। स्वच्छता एप डाउनलोड करने के बाद आप ये 11 तरह की शिकायतें आसानी से कर सकते हैं। इनमें गार्बेज डंप, कचरा वाहन न आना, गंदे डस्टबिन, झाड़ू न लगना, मृत मवेशी पड़े होना, पब्लिक टॉयलेट साफ न होना, पब्लिक टॉयलेट जाम होना, पब्लिक टॉयलेट में पानी सप्लाई न होना, पब्लिक टॉयलेट में बिजली न होना, खुले में शौच या पेशाब करना और सीवेज से जुड़ी परेशानियां शामिल हैं।

मध्यप्रदेश समेत देशभर के ट्रक ऑपरेटर्स की डिमांड पूरी

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रदेश के सीमावर्ती जिलों में बने परिवहन चेक पोस्ट बंद हो जाएंगे। इनकी जगह अब गुजरात मॉडल पर 26 जिलों में 45 रोड सेफ्टी-एनफोर्समेंट चेकिंग पॉइंट बनेंगे। इनमें मानव रहित तकनीक का इस्तेमाल होगा। हालांकि, उपकरण आने तक मोबाइल फ्लाइंग स्कवाड जांच करेगा। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि नई व्यवस्था पारदर्शी होगी। उन्होंने वीडियो कांफ्रेंस के जरिये सभी प्रशासनिक और पुलिस अधिकारियों को निर्देश दिए कि नई व्यवस्था में सहयोग दें, जिससे कि बाहरी वाहन चालकों को समस्या नहीं हो।कहा कि अब पूरी तरह से पारदर्शी व्यवस्था होगी। इससे आने वाले बाहरी वाहनों को दिक्कत नहीं होगी। प्रदेश के 26 जिलों में 45 चेक पॉइंट बनेंगे। सीमावर्ती जिलों में मोबाइल फ्लाइंग स्कवाड काम करेंगे। परिवहन - पुलिस के अलावा 211 होम गार्ड बारी-बारी से ड्यूटी करेंगे। नाकों पर मोबाइल टीम रहेंगी और चेक पॉइंट का स्टाफ भी निर्धारित समय में बदलेगा। परिवहन विभाग ने रविवार को ही परिवहन चेक पोस्ट बंद किए जाते हैं। एक अन्य आदेश में कहा गया कि चेक पॉइंट में अभी तकनीकी उपकरण कि

व्यवस्था में समय लगेगा।

तब तक परिवहन-पुलिस का अमला होम गार्ड्स के सहयोग से मोबाइल यूनिट के माध्यम से चेकिंग करता रहेगा। इंदौर ट्रक ऑपरेटर्स एंड ट्रांसपोर्टर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष सीएल मुकाती ने परिवहन नाके बंद करने के निर्णय पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि नई व्यवस्था से ट्रक ऑपरेटरों की समस्या 70 फीसदी तक खत्म हो जाएगी। इससे न सिर्फ ट्रक ऑपरेटरों को फायदा होगा, बल्कि हाईवे पर भी इकोनॉमी बेहतर होगी। बाहर की गाड़ियां आएंगी तो ढाबे, पेट्रोल पम्प पर भी कारोबार बढ़ेगा। हालांकि, उन्होंने कहा कि जल्द से जल्द मानव रहित व्यवस्था बनाकर टेक्नोलॉजी के ?जरिये गुजरात से भी अच्छा मॉडल बनाया जाना चाहिए।

प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस में दीक्षारंभ समारोह का हुआ शुभारंभ

नवप्रवेशित छात्र-छात्राओं का किया गया स्वागत एवं उन्मुखीकरण

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। मध्य प्रदेश शासन उच्च शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस संजय गांधी स्मृति शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय सीधी में सत्र 2024-25 के नव प्रवेशित छात्र-छात्राओं के उन्मुखीकरण एवं महाविद्यालय से परिचय हेतु तीन दिवसीय दीक्षारंभ कार्यक्रम का आज शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम सीधी जिले के अपर कलेक्टर राजेश शाही के मुख्य आतिथ्य एवं महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. पी के सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का प्रारंभ मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन तथा सरस्वती वंदना के

साथ हुआ।

अपर कलेक्टर राजेश शाही ने छात्र-छात्राओं को परिश्रम, अनुशासन, धैर्य एवं समर्पण पर जोर देते हुए नए आयाम स्थापित करने के लिए प्रेरित किया। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ पी.के. सिंह ने महाविद्यालय के प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस के रूप में उन्नयन का उद्देश्य, महाविद्यालय की विकास यात्रा एवं इस सत्र से प्रारंभ हो रहे नवीन पाठ्यक्रमों तथा इसके पीछे मध्य प्रदेश शासन उच्च शिक्षा विभाग की मंशा इत्यादि की विस्तृत जानकारी प्रदान की।

कार्यक्रम के समन्वयक डॉ रावेंद्र बहादुर सिंह ने संस्था को कैसे उत्कृष्ट बनाया जाए इस पर अपनी बात कही। उद्घाटन सत्र का सफल संचालन महाविद्यालय के प्रोफेसर डॉ अनिल कुमार सिंह ने किया जबकि आभार प्रदर्शन प्रधानमंत्री कॉलेज आफ एक्सीलेंस के सहायक नोडल अधिकारी डॉ अश्वनी द्विवेदी ने किया। द्वितीय सत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, विषय वस्तु, विषय का चयन इत्यादि पर डॉ. उमाकांत साहू ने विस्तृत जानकारी प्रदान किया, जबकि परीक्षा प्रणाली के संदर्भ में महाविद्यालय की परीक्षा नियंत्रक डॉ. प्रभाकर सिंह ने छात्र-छात्राओं को परिचित कराया। द्वितीय सत्र का सफल संचालन डॉ आशुतोष पाण्डेय ने किया।

तीन दिवस तक चलने वाले दीक्षारंभ कार्यक्रम के प्रथम दिवस के दोनों सत्रों में नव प्रवेशित छात्र-छात्राओं को महत्वपूर्ण विषयों से अवगत कराया गया। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ सिंह ने सत्र 2024-25 के लिए नव प्रवेशित छात्र-छात्राओं से आग्रह किया है कि 2 एवं 3 जुलाई को भी सुबह 9 बजे महाविद्यालय के ऑडिटोरियम में उपस्थित होकर करियर उन्नयन एवं महाविद्यालय के संबंध में दी जाने वाली सभी जानकारी को प्राप्त करें तथा सभी नव प्रवेशित छात्र-छात्राएं अधिक से अधिक संख्या में महाविद्यालय आए जिससे दीक्षारंभ कार्यक्रम के माध्यम से दी जाने वाली सभी जानकारियों का लाभ ले सकें।

झोलाछाप डाक्टर और अवैध क्लीनिक संचालकों पर नहीं हो रही कार्रवाई

मीडिया ऑडीटर, जवा निप्र। इन दिनों जवा तहसील अंतर्गत गांव-गांव में बिना डिग्रीधारी झोलाछाप डाक्टर अवैध क्लीनिक संचालित कर रहे हैं। जो मरीजों की जान के साथ खिलवाड़ करने के साथ ही उनकी जेब भी ढीली कर रहे हैं। जिसकी खबरें आये दिन मीडिया में प्रकाशित होती रहती हैं। लेकिन सीएमएचओ रीवा और जवा बीएमओ के कानों में जूं तक नही रेंगती। झोलाछाप डाक्टर मनमानी तरीके से मरीजों की जान जोखिम में डालते हुये मोटी रकम भी वसूलते हैं।

बतादें कि जवा तहसील अंतर्गत जवा मुख्यालय में कई छोट-छोटे क्लीनिक संचालित हैं।

पूरे तहसील की बात की जाए तो डभौरा में दर्जनों अवैध क्लीनिक हैं। वहीं पनवार, रामबाग, पटेहरा, नगमा, सितलहा, पेट्रोल टंकी के पास भक्ता बाबा की बरौली, अतरैला, गाढ़ा 138, 137, भखरवार, सांती, अंदवा, गढ़वा, खम्हरिया, चौखंडी, बसरेही, किरहाई मोड़ सहित अन्य कई गांवों में अवैध क्लीनिक एवं बिना डिग्री के झोलाछाप डॉक्टरों की भरमार है। जो जवा बीएमओ के संरक्षण में चल रहे हैं। कार्यवाही व जांच नहीं होने से अवैध क्लीनिक संचालक मनमानी पर उतारू रहते हैं। जिसका नतीजा है कि आये दिन इन अस्पतालों में किसी न किसी मरीज की जांच जा रही है।

बताया जा रहा है कि कार्रवाई से बचने के लिये इन क्लीनिक और अस्पताल संचालकों द्वारा मोटी रकम नीचे से ऊपर तक के जिम्मेदार अधिकारियों तक पहुंचाई जाती है।

नए आपराधिक कानून आज से लागू

एसडीओपी और थाना प्रभारी ने आम नागरिकों को नए कानून के बारे में दी जानकारी

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। पूरे भारत देश में तीन नए कानून को बना दिया गया है। जहां पर नए कानून बनने के बाद उसे लोगों तक पहुंचाने के लिए और लोगों को समझने के लिए जगह-जगह पर बैठक का आयोजन किया जा रहा है। जहां थाना प्रभारी रामपुर नैकिन के किन रक्षक सुधांशु तिवारी के नेतृत्व में बैठक आयोजन किया गया। जिसमें बने तीनों नए कानूनों के बारे एसडीओपी, तहसीलदार और थाना प्रभारी ने विस्तृत जानकारी दी।

जिसमें आईपीसी के प्रावधानों को खत्म करने के बाद बीएनएस को शामिल किया है। इसके अलावा बीएनएसएस वा इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्य को भी शामिल किया गया है। इन सभी को लेकर आज रामपुर नैकिन के नगर पंचायत के सामुदायिक भवन में बैठक का आयोजन किया गया था।

बैठक में मुख्य रूप से एसडीओपी चुरहट आशुतोष द्विवेदी के साथ थाना प्रभारी रामपुर नैकिन सुधांशु तिवारी, तहसीलदार रामपुर नैकिन नितिन कुमार झोड़, नया तहसीलदार के साथ जनपद पंचायत सीईओ और विभिन्न कर्मचारी और आम नागरिक मौजूद रहे हैं।

युवती को बेचने वाले 4 आरोपी गिरफ्तार

1 लाख में सौदा करने के बाद दूसरे राज्य भाग गए थे आरोपी

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। मानव तस्करी में एमपी के सीधी जिले को भी शामिल कर लीजिए। अब यहां भी बच्चे और महिलाएं सुरक्षित नहीं है। यहां एक युवती को बेचने का मामला सामने आया है।

सीधी जिले के कुसमी थाना क्षेत्र अंतर्गत एक युवती को आगरा के सगुनापुर में 1 लाख रुपए में बेचने का मामला सामने आया था। इसके बाद एसपी ने तत्काल टीम गठित की और थाना प्रभारी को तत्परता से जांच करने के निर्देश दिए थे। देरी ना करते हुए कुसमी पुलिस ने विशेष छानबीन की और कार्रवाई शुरू कर दी, जिसके बाद चारों आरोपियों को अलग-अलग स्थान से गिरफ्तार कर लिया है। जिसमें दो आरोपियों को जेल भेज दिया था

और दो आरोपियों को गिरफ्तार कर कार्रवाई की जा रही है।

महिला के अनुसार 22 फरवरी 2024 को सुरेंद्र सिंह अपने साथ घूमने के लिए उत्तर प्रदेश ले गया था। जहां सीता सिंह के साथ मेरा संपर्क हुआ और उसके माध्यम से मुझे बेच दिया गया।

इसके बाद 30 मई को मैं उनकी कैद से छूटकर भागी और कुसमी में पहुंचकर रिपोर्ट दर्ज कराई थी। जिसके बाद सुरेंद्र सिंह और धर्मराज सिंह को 1 जून को गिरफ्तार कर लिया गया था और बचे हुए दो साथियों को सोमवार के दिन गिरफ्तार कर लिया गया है।

इनको किया गिरफ्तार: कुसमी थाना प्रभारी भूपेश बैस ने जानकारी देते हुए बताया है कि युवती को बेचने वाले आरोपियो में सुरेंद्र पिता सकसूदन सिंह (41) चगोहर, धर्मराज उर्फ दीपू (28) निवासी चमोहर, सीता देवी उर्फ मुन्नीबाई (43) निवासी फ्तेहपुर सीकरी आगरा उत्तर प्रदेश और राजवीर सिंह उर्फ पास पिता मेंबर सिंह (47) निवासी सगुना पर थाना केरावली उत्तर प्रदेश मुख्य आरोपी थे।

जिसमें से पुलिस ने छत्तीसगढ़ से सुरेंद्र और सूरत से धर्मराज सिंह दीपू को पकड़ कर सलाखों के पीछे पहुंचा दिया। अब सीता देवी उर्फ मुन्नी बाई और राजवीर सिंह को आगरा से गिरफ्तार कर लिया है।

हाइवा और ट्रैक्टर में खुलेआम हो रहा अवैध परिवहन, मूक दर्शक बनी पुलिस

मीडिया ऑडीटर, जवा निप्र। रीवा जिले का जवा थाना बीते कुछ वर्षों से हमेशा अपने कारनामो के लिए सुर्खियों में रहता है। चाहे शराब पैकारी का मामल हो या नशा का कारोबार हो या सिपाही के द्वारा अवैध वसूली का मामला। इसके बावजूद पुलिस अधीक्षक के द्वारा ध्यान नही दिया जा रहा है। इसी कड़ी में जवा थाना अंतर्गत सैकड़ो की संख्या में प्रतिदिन अवैध परिवहन करते ट्रैक्टर और हाइवा जवा थाने सामने से फर्राटे मारते निकलते हैं। जिससे कई दुर्घटनाएं भी हो चुकी गई है फिर भी जवा पुलिस के द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की जाती है।समाजसेवी केशव प्रसाद तिवारी ने जवा पुलिस पर मंथली ट्रैक्टर वालों से 3000 रुपये और हाइवा वालों से 5000 रुपये लेने का आरोप लगाए है। उनका कहना है कि जवा थाने के सामने से रोजाना ट्रैक्टर-हाइवा 24 घण्टे निकलते हैं, जो थाने में लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद होते है फिर भी कार्यवाही नहीं की जाती है। जिसके चलते आये दिन दुर्घटनाएं हो रही हैं।

नर्सिंग घोटाले और नीट पेपर लीक के विरोध में कांग्रेस ने धरना देकर सौंपा ज्ञापन

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। प्रदेश में हुए नर्सिंग घोटाले एवं पेपर लीक घोटालों को लेकर युवाओं को न्याय दिलाने हेतु प्रदेश कांग्रेस जीतू पटवारी के निर्देशन में जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष के मुख्य आतिथ्य में कांग्रेस ने कलेक्टर कार्यालय के समक्ष धरना.प्रदर्शन, पुतला दहन कार्यक्रम आयोजित कर चिकित्सा मंत्री के इस्तीफा, नर्सिंग घोटाला और नीट पेपर लीक की उच्च स्तरीय जांच कराए जाने की मांग को लेकर महामहिम राज्यपाल के नाम का ज्ञापन कलेक्टर माध्यम से सौंपा गया।

धरना प्रदर्शन को संबोधित करते हुए जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष ने कहा कि प्रदेश में

लगातार हो रहे शिक्षा घोटालों से सत्तारूढ़ प्रदेश की भाजपा सरकार के कार्यकाल में युवाओं का भविष्य अंधकारमय हो गया है। भाजपा राज में परीक्षाओं पर शिक्षा माफ्मिा का कब्जा है, वो भाजपा की सह पर छात्रों के भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रहे है देश में प्रतियोगी परीक्षाओं में पारदर्शिता पूरी तरह समाप्त हो गई है।

परीक्षाओं के पेपर लीक होना इस सरकार में आम बात हो गई है। नीट परीक्षा का पेपर लीक हुआ 24 लाख बच्चों का भविष्य अंधेरे में धकेला गया है।

जिलाध्यक्ष ने कहा कि भाजपा सरकार पेपर लीक रोकने में पूरी तरह से विफ्ल साबित हुई है। पुलिस हवलदार, नर्सिंग घोटाला, डेयरी अधिकारियों, सूबेदार उपनिरीक्षक भर्ती में घपले हुये, वन रक्षक, आरटीओ विभाग में भर्ती में घपले हुये। पटवारी भर्ती घोटाला, प्राथमिक शिक्षक भर्ती घोटाला हुआ है। पेपर लीक का कलंक प्रदेश पर लगा है। उक्त कार्यक्रम का संचालन जिला उपाध्यक्ष दिनेश पाठक ने किया।

इन्होंने भी किया संबोधित: पूर्व अध्यक्ष चिंतामणि तिवारी, महिला कांग्रेस अध्यक्ष कमलेश सिंह, नगर पालिका अध्यक्ष काजल वर्मा, जिला उपाध्यक्ष विनोद वर्मा, संभागीय प्रवक्ता प्रदीप सिंह दीपू, जिला उपाध्यक्ष आकाश सिंह, युवा कांग्रेस अध्यक्ष देवेंद्र सिंह, एनएसयूआई अध्यक्ष सौरभ सिंह, ब्लॉक अध्यक्ष यज्ञराज साहू, इंटक अध्यक्ष विष्णु बहादुर सिंह सहित अन्यजन शामिल रहें। धरना प्रदर्शन कार्यक्रम में प्रमुख रूप से वरिष्ठ उपाध्यक्ष आनंद सिंह शेर, विधानसभा प्रभारी नवीन सिंह, हरिहर सोनी, वरिष्ठ पार्षद विनोद मिश्रा, सहित कांग्रेस पदाधिकारी युवा कांग्रेस एनएसयूआई महिला कांग्रेस पदाधिकारी कार्यकर्ता सहित आमजन शामिल रहें।

उपेंद्र द्विवेदी के थल सेना अध्यक्ष बनने पर विन्ध्य हुआ गौरवान्वित : सांसद

सीधी निप्र। लोकसभा संसदीय क्षेत्र के सांसद डॉ राजेश मिश्रा ने रीवा जिले के निवासी उपेंद्र द्विवेदी को भारतीय थल सेवा का अध्यक्ष बनने पर ढेर सारी बधाइयां और शुभकामनाएं दी हैं। सांसद डॉ राजेश मिश्रा ने कहा कि द्विवेदी के थल सेना अध्यक्ष बनने पर पूरा विंध्य गौरवान्वित हुआ हैं। विंध्य की धरती पुण्य भूमि हैं और यहां से निकले हुए कई लाड़लो ने विंध्य के नाम को गौरवान्वित किया है। सांसद डॉक्टर राजेश मिश्रा ने द्विवेदी के उज्जवल भविष्य और स्वर्णिम कार्यकाल की कामना की है। रीवा सैनिक स्कूल के पूर्व विद्यार्थी जनरल उपेंद्र द्विवेदी को भारतीय थल सेना के 30 वें अध्यक्ष का पदभार संभालने पर हार्दिक शुभकामनाएं।

10वीं-12वी के मेधावी छात्रों को किया गया सम्मानित

मीडिया ऑडीटर, जवा निप्र। 10वी एवं 12वी में 90 प्रतिशत से ऊपर लाने वाले छात्र-छात्राओं का सम्मान बरहुला हायर सेकेंडरी स्कूल में किया गया। आयोजन अभियान परिषद ग्राम विकास प्रस्फुटन समिति सम्बंध विद्यावती जन कल्याण सेवा संस्थान समिति बरहुला के तत्वावधान में हुआ। छात्र-छात्राओं का सम्मान रिटायर्ड सब इंस्पेक्टर व पूर्व सैनिक योग शिक्षक संतोष तिवारी गींजातर के मुख्य अतिथि एवं प्राचार्य घनश्याम सिंह बघेल व समाजसेवी सुरेंद्र तिवारी के हाथों किया गया।मेधावी छात्र-छात्राओं को मां सरस्वती तस्वीर एवं हनुमान चालीसा व श्रीफल देकर सम्मानित किया गया।सम्मानित छात्र-छात्राओं में शालनी अग्निहोत्री सीएम राइस स्कूल डभौरा जिनका 12वी में 92 प्रतिशत अंक। पूर्णिमा मिश्रा आर्योदय पब्लिक स्कूल अतरेला का 92 प्रतिशत अंक। सुभद्रा मिश्रा जनता उच्चतर माध्यमिक विद्यालय अतरैला। ध्रव गुप्ता, सूर्य प्रकाश तिवारी हायर सेकेंडरी स्कूल बरहुला से शामिल हैं।

कार्यक्रम में समिति के अध्यक्ष सज्जन तिवारी के द्वारा समाज सेवी सुरेंद्र तिवारी, रिटायर्ड फौजी विद्याशंकर तिवारी, प्राचार्य घनश्याम सिंह बघेल को शाल श्रीफल व हनुमान चालीसा की पुस्तक देकर सम्मानित किया गया। इस दौरान समिति के अध्यक्ष सज्जन तिवारी के तत्वाधान में मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव के द्वारा एक पेड़ मां के नाम लगाने का आह्वान किया गया। बरहुला स्कूल के प्रांगण में आम का एक पेड़ समिति के माध्यम से लगाया गया। कार्यक्रम में बरहुला स्कूल के शिक्षक आनंद पांडेय, सनत कुमार तिवारी, शुशील कुमार सहित सामाजिक लोगो की उपस्थिति दर्ज की गई। संचालन यस अग्निहोत्री के द्वारा किया गया।

नवीन अपराध अधिनियम 2023 लागू, जिला स्तरीय कार्यक्रम मानस भवन में आयोजित

पुलिस अधीक्षक ने जन जागरूकता रथ को दिखाई हरी झंडी

मीडिया ऑडीटर, सीधी निप्र। सोमवार को लागू हुये नवीन आपराधिक अधिनियम.2023 को दृष्टिगत रखते हुए जिले के समस्त थानो में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्यालय स्तर पर जिले के मानस भवन में कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य जिला न्यायाधीश संजीव पाण्डेय की अध्यक्षता एवं कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी, पुलिस अधीक्षक डॉ. रविन्द्र वर्मा व वन मण्डल अधिकारी क्षितिज कुमार के उपस्थिति में आयोजित हुआ।

पुलिस अधीक्षक डॉ.रविन्द्र वर्मा द्वारा कार्यक्रम में उपस्थित गणमान्य नागरिको को नवीन प्रक्रियाओं के तहत हुए बदलाव से अवगत कराकर उनके फायदे के बारे में बताया गया कि अब हम सभी नवीन कानून के प्रभावी क्रियान्वयन की जिम्मेदारी है। कानून में जो मूल परिवर्तन हुये है उनका नागरिको पर क्या प्रभाव

पड़ेगा के संबंध में संबोधित किया गया। अभी तक हम अंग्रेजो के समय में बने भारतीय दण्ड संहिता का प्रयोग कर रहे थें, जिनमें काफी विसंगतिया थी लेकिन अब लागू हो रहा नया कानून भारत के लोगो को न्याय देने वाला है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य न्यायाधीश संजीव पाण्डेय द्वारा बताया गया कि हमारे पास जितनी भी धाराएं 1860 से चली आ रही है अभी तक लगभग वही हैं लेकिन उनकी जगह अब तीन नये कानून मिले है जो भारतीयों को न्याय दिलायेगे। कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी ने अपने उद्बोधन में बताया कि लागू हो रहे नवीन कानून जन हितैशी हैं, जिनका हमे पालन कराना है। मंच का संचालन अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अरविन्द श्रीवास्तव ने किया। कार्यक्रम के अंत में पुलिस अधीक्षक द्वारा उपस्थित लोगो के प्रश्नो का उत्तर दिया गया एवं अंत में राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

थाना चौकी क्षेत्र में आयोजित हुआ कार्यक्रम: जिला मुख्यालय के कार्यक्रम के साथ ही जिले के अलग.अलग थानो में भी कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें थाना बहरी अंतर्गत थाना बहरी सभागार में निरीक्षक राकेश बैस एवं शासकीय विद्यालय बहरी के शिक्षक छात्र एवं गणमान्य नागरिक व मीडियाकर्मियों की उपस्थिति में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। थाना रामपुर नैकिन अंतर्गत सामुदायिक भवन रामपुर नैकिन में न्यायायिक मजिस्ट्रेट प्रथम श्रेणी परमानन्द सनोडिया, एसडीओपी आशुतोष द्विवेदी, निरीक्षक सुधांशु तिवारी एवं तहसीलदार रामपुर नैकिन नितीन जोध चौकी पिपरावए खड्डी का स्टॉफ व विद्यालय के शिक्षक छात्र एवं गणमान्य नागरिक की उपस्थिति में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। थाना मझौली अंतर्गत पुलिस थाना मझौली में एसडीओपी सुश्री रोशनी सिंह, उनि दीपक बघेल चौकी मडवास, पथरौला का स्टॉफ व विद्यालय के शिक्षक छात्र एवं गणमान्य नागरिक की उपस्थिति में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। थाना कुसमी अंतर्गत पुलिस थाना कुसमी परिसर में उनि भूपेश बैस, विद्यालय के शिक्षक छात्र एवं गणमान्य नागरिक की उपस्थिति में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। थाना अमिलिया अंतर्गत सामुदायिक भवन में निरीक्षक राजेश पाण्डेय विद्यालय के शिक्षक छात्र एवं गणमान्य नागरिक की उपस्थिति में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। थाना कमर्जी अंतर्गत पुलिस थाना कमर्जी परिसर में उनि. पवन सिंह विद्यालय के शिक्षक छात्र एवं गणमान्य नागरिको की उपस्थिति में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। थाना चुरहट अंतर्गत सामुदायिक भवन में निरीक्षक पुष्पेन्द्र मिश्रा, चौकी सेमरियाए बम्हनी का स्टॉफ व विद्यालय के शिक्षक छात्र एवं गणमान्य नागरिको की उपस्थिति में कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

किशोरियों ने एनीमिया को पूरी तरह समाप्त करने का लिया संकल्प

मीडिया ऑडीटर, डभौरा निप्र। विकास संवाद समिति डभौरा द्वारा संचालित दस्तक परियोजना के अंतर्गत 25 गावों में गठित दस्तक किशोरी समूह की 50 प्रतिनिधि किशोरियों की दो दिवसीय जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन सिंह पैलेश डभौरा में आयोजित किया गया था जिसका आज दूसरे दिन कार्यशाला का समापन किया गया। जहां पर सहजकर्ताओं द्वारा किशोरियों को एनीमिया प्रबंधन, लैंगिक भेदभाव को खत्म करने, खाने में संतुलित आहार, किशोरी स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा, नेतृत्व विकास, हीमोग्लोबीन टेस्ट, बीएमआई जाँच एवं उसके महत्व, सोशल मीडिया का सुरक्षित उपयोग आदि को लेकर संवाद और आगामी छह महीनों की प्लानिंग आदि को लेकर चर्चा की गई। इस दौरान जिला समन्वयक जय कुमार यादव ने बताया कि परियोजना के तहत कार्यक्षेत्र के 25 गाँव में बने हुए दस्तक किशोरी समूह के प्रत्येक गाँव से दो दो प्रतिनिधियों को मिलाकर 50 प्रतिनिधियों को प्रत्येक वर्ष जिला स्तरीय कार्यशाला में शामिल करते हैं जिसमे किशोरियों में प्रातिनिधत्व की क्षमता का विकास, कौशल विकास, किशोरी सशक्तिकरण, लैंगिक भेदभाव को खत्म करने, एनीमिया प्रबंधन, पोषण, स्वास्थ्य और शिक्षा आदि को लेकर संवाद स्थापित कर सीखने और सिखाने का काम करते हैं।

विचार

डॉक्टर्स डे' खूबसूरत परिकल्पना को साकार करने की प्रेरणा

जन्म से लेकर उम्र के आखिरी पड़ाव तक चिकित्सक ही इंसान के रूप में वो भगवान होता है जो बार-बार बहुमूल्य जीवन को बचाता है। भगवान बस एक बार खूबसूरत जिंदगी देता है। लेकिन उसे तमाम अशक्तता और बीमारियों से छुटकारा देकर सुंदर डाक्टर ही बनाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो भगवान का दूसरा रूप यदि इस धरती पर कोई है तो वह डाक्टर ही है। विश्व में न जाने ऐसे कितने उदाहरण मिल जाएंगे जब धरती के इस भगवान ने एक से एक वह काम किए जिसे देखकर हर कोई हैरान रह जाता है। आज हमें शरीर में कोई व्याधि या रुग्णता दिखती है तो सीधे डाक्टर ही याद आते हैं। दवा और दुआ का यही अनोखा संगम डाक्टर को धरती का भगवान बनाता है। शायद इसीलिए चाहे आम हो या खास हर कोई डाक्टर को धरती का साक्षात भगवान कहते हैं। भारत में तो इनका महत्व वैद्य के रूप में चिर काल से है। हमारे अनेकों धार्मिक ग्रन्थों में इस बात का वर्णन भी है। इन्हीं समर्पण और त्याग को याद करते हुए 1 जुलाई का दिन भारत में 'राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस' यानी 'डॉक्टर्स डे' के रूप में मनाया जाता है। देश के प्रख्यात चिकित्सक, स्वतंत्रता सेनानी, समाज सेवी भारत रत्न डा. बिधान चन्द्र रॉय की याद में मनाने की परंपरा वर्ष 1991 से 1 जुलाई को शुरू हुई। इसी दिन इस महान विभूति का जन्मदिन और पुण्य तिथि दोनों हैं। इसके पीछे श्रेष्ठ और नेक मकसद यह भी कि सभी चिकित्सक अपनी जिम्मेदारियों को समझें और लोगों के स्वास्थ्य से संबंधित दुख, तकलीफ और रोगों के प्रति सजग रहें। 1 जुलाई, 1882 को जन्मे बिधान चन्द्र रॉय भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के भी अहम सिपाही थे। वह 14 साल तक पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री भी रहे। राज्य के स्वास्थ्य सेवा ढांचे और सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों में महत्वपूर्ण योगदान दिया।कई अस्पताल, मैडीकल कॉलेज की स्थापना के साथ स्वास्थ्य सेवाओं में महत्वपूर्ण बदलावों के समर्थन के साथ सभी तक स्वास्थ्य सेवा पहुंचाने के प्रबल पक्षधर रहे। स्वतंत्रता के बाद इन्होंने सारा जीवन चिकित्सा सेवा को समर्पित कर दिया। पश्चिम बंगाल में अपने मुख्यमंत्रित्व काल के दौरान कई अहम विकास कार्य किए। उनके अथक प्रयासों और समाज कल्याण कार्यों के लिए वर्ष 1961 में भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से भी सम्मानित किया गया। 1 जुलाई, 1962 को उनका निधन हुआ। डा. रॉय के प्रति सम्मान और जनसामान्य में चिकित्सकों के विश्वास की डोर को बनाए रखने और बढ़ाने के उद्देश्य से भरे इस दिवस को मनाने के पीछे उनकी सच्ची याद के साथ चिकित्सकीय पेशे की पवित्रता की निरंतर याद दिलाना भी है। बढ़ती जनसंख्या और प्रतिस्पर्धा के नए दौर में सबकी चिकित्सा और निरोगी काया अपरिहार्य है। यह एक ऐसा व्यवसाय है, जिस पर लोग विश्वास करते हैं। बस यही बनाए रखने और चिकित्सकों को भी भान कराने की खातिर दुनिया भर में 'डॉक्टर्स डे' को अलग-अलग दिनों में मनाए जाने की परंपरा है। यह दिन चिकित्सकों के लिए भी बेहद महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्हें अपनी चिकित्सकीय शिक्षा, प्रशिक्षण और शपथ को याद करने के साथ ही जितना किया उससे भी श्रेष्ठ करने की प्रेरणा देता है।

टीम इंडिया ने खत्म किया 17 साल का सूखा, टी-20 से विराट, रोहित और जडेजा ने लिया संन्यास

आदर्श प्रकाश सिंह

भारत की टीम ने कमाल का प्रदर्शन किया है। टी-20 विश्व कप में 17 साल का सूखा खत्म हुआ। क्रिकेट के इस छोटे प्रारूप में हम अब विश्व चैम्पियन हैं। पूरी टीम एकजुट होकर खेली और देश को जश्न मनाने का मौका दे दिया। 29 जून की रात सात समुंदर पार बारबाडोस में हमारी टीम ने इतिहास रचा और इधर भारत के शहरों में दिवाली मन गई। कितना उत्साह और उल्लास था, देशवासियों ने यह सब अपने टीवी के पर्दे पर अवश्य देखा होगा। खास बात यह कि पूरे टूर्नामेंट में टीम इंडिया ने अजेय रहते हुए विश्व कप अपने नाम कर लिया। इस दौरान हमारे खिलाड़ियों ने पाकिस्तान, बांग्लादेश, ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड का मानमर्दन किया। और जब फाइनल में हमारे सामने दक्षिण अफ्रीका की टीम थी तो उसके जबड़े से हारता हुआ मैच छीन लिया।

सच में 15वें ओवर तक जो स्थित थी उसके अनुसार मैच पर दक्षिण अफ्रीका की मजबूत पकड़ बन चुकी थी। मगर, किस्मत उस दिन भारत के साथ थी। लाखों करोड़ों खेल प्रेमियों की दुआएं टीम इंडिया के साथ थी। लिहाजा 16वें ओवर में मैच ऐसा पलटा कि भारत की झोली में आ गिरा। आखिरी ओवर में सूर्य कुमार द्वारा सीमा रेखा पर लपका गया कैच तो कोई भूल नहीं पाएगा। यदि मिलर का वह कैच नहीं पकड़ा गया होता तो भारत का जीतना मुश्किल था। लेकिन कहते हैं न कि किस्मत बहादुरों का साथ देती है तो उस दिन ऐसा ही हुआ। हम सबको अपनी टीम पर गर्व है। यह जीत लंबे अर्से बाद हासिल हुई है। आईसीसी का कोई टूर्नामेंट भारत ने 2013 में जीता था। तब चैम्पियंस ट्राफी में हमें जीत मिली थी। इस शानदार विजय के साथ ही देश के तीन प्रमुख खिलाड़ियों ने टी-20 से संन्यास का ऐलान कर दिया है। सबसे पहले विराट कोहली, उसके बाद कप्तान रोहित शर्मा और अब रवींद्र जडेजा ने इस फार्मेट से खुद को अलग कर लिया है। यह निर्णय बहुत ही सराहनीय है। ये तीनों 35 से 40 साल के उम्र के बीच में हैं। अतरू संन्यास लेने के लिए यही उचित समय भी है। युवा खिलाड़ी बाहर बैठ कर मौके का इंतजार कर रहे हैं। आप देखिए कि यशस्वी जायसवाल को टीम में चुना गया था लेकिन कोई मैच नहीं खेल पाए। लेग स्पिनर यजुवेंद्र चहल पिछले विश्व कप 2022 और इस विश्व कप में टीम के साथ थे लेकिन अंतिम एकादश में चयन नहीं हो सका। यही हाल विकेटकीपर संजू सैमसन का रहा। वह बिना कोई मैच खेले टीम के साथ वापस आएंगे। इसलिए इन तीनों सीनियर खिलाड़ियों ने जो निर्णय किया है वह देशहित में है। इसका स्वागत किया जाना चाहिए। फिर विराट कोहली ने तो कहा भी है कि मैं युवाओं को मौका देने के लिए ही टी-20 से संन्यास ले रहा हूं। कोहली पूरे विश्व कप में रन नहीं बना सके लेकिन फाइनल मुकाबले में उन्होंने 76 रनों की पारी खेल कर अपना सम्मान बचा लिया। उनसे पारी का आगाज कराने का प्रयोग सफल नहीं रहा। आईपीएल में विराट ने बेंगलुरू टीम से खेलते हुए सलामी बल्लेबाज की भूमिका निभाई थी और कामयाब भी रहे थे। पर, विश्व कप में वह विफल रहे। दो बार तो शून्य पर आउट हुए। खैर, अब वनडे और टेस्ट मैच में वह खेलते दिखेंगे। उन्हें सचिन तेंदुलकर के 100 शतकों का रिकॉर्ड भी तोड़ना है। इसकी उम्मीद हम सभी को है। रोहित शर्मा ने 2007 के टी-20 विश्व कप से अपने कॅरियर का आगाज किया था। वह इस प्रारूप का पहला विश्व कप था जिसे महेंद्र सिंह धोनी की कप्तानी में भारत ने जीता था। उसके बाद से भारत विजय के लिए तरस रहा था। आखिर 17 साल बाद देशवासियों की मुराद 2024 में पूरी हुई। हिटमैन कहे जाने वाले रोहित सभी विश्व कप में खेले और संयोग देखिए कि अपनी कप्तानी में उन्होंने भारत को खिताबी जीत दिला दी। टी-20 से संन्यास के बाद उनका ध्यान निश्चित रूप से वनडे और टेस्ट मैच पर रहेगा। विश्व कप में स्पिनर रवींद्र जडेजा का प्रदर्शन कुछ खास नहीं रहा। वह केवल एक विकेट ले पाए। उन्हें बल्लेबाजी और गेंदबाजी में ज्यादा मौके भी नहीं मिले। बाएं हाथ के बल्लेबाज होने के कारण उन्हें अंतिम एकादश में जगह मिलती रही लेकिन चार पारियों में वह केवल 35 रन बना सके। इसलिए टी-20 से संन्यास का उनका निर्णय भी सही है। सच कहें तो इस विश्व कप में हमारी गेंदबाजी बहुत धारदार रही है। इसी के दम पर भारत ने विपक्षी टीमों को आसानी से हरा दिया। पाकिस्तान के खिलाफ 119 रन बनाने के बावजूद यदि हम जीते तो उसमें गेंदबाजों का योगदान ही खास रहा। जसप्रीत बुमराह ने पूरे विश्व कप में 15 विकेट लिये। उन्हें टूर्नामेंट का श्रेष्ठ खिलाड़ी चुना गया। युवा अर्शदीप सिंह भी कसौटी पर खरे उतरे। उसने कुल 17 विकेट चटकाए। आलराउंडर हार्दिक पांड्या को लेकर आईपीएल में खूब नकारात्मक बातें हुईं। पर, उसने विश्व विजेता बनाने में अहम भूमिका निभाई। स्पिनर कुलदीप यादव और अक्षर पटेल ने भी अपनी उपयोगिता साबित की। केवल फाइनल में ये दोनों पिट गए। इसके अलावा हर मैच में इनका दबदबा रहा। इस विश्व कप की एक खास बात अफगानिस्तान के साथ जुड़ी है। वह पहली बार किसी बड़ी प्रतियोगिता के सेमीफाइनल में पहुंचने वाली टीम रही। अफगान खिलाड़ियों ने न्यूजीलैंड, श्रीलंका और सुपर-8 में ऑस्ट्रेलिया और बांग्लादेश को हराकर बड़ा उलटफेर किया। एक उलटफेर अमेरिका की टीम ने पाकिस्तान को हराकर किया। इसलिए यह विश्व कप इन बातों के लिए भी याद रखा जाएगा कि न्यूजीलैंड जैसी टीम पहले ही चरण में बाहर हो गई।

बेहतर कल का सपना देख रही स्ट्रीट लाइट के नीचे एक बच्ची

आधी रात के करीब मैंने आइसक्रीम खाने के लिए सड़क पर गाड़ी चलाने का फैसला किया। मैंने सड़कें खाली पाईं, लेकिन मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि प्रत्येक स्ट्रीट लाइट के नीचे, फुटपाथ पर बच्चे बैठे थे, जो अपनी गोद में रखी अध्ययन पुस्तकों को पूरी एकाग्रता से देख रहे थे। मैंने शायद 12 या 13 साल की एक छोटी लड़की को देखा जिसके चेहरे पर ऊपर की स्ट्रीट लाइट की कमजोर किरणों से जगमगाती एकाग्रचित्त एकाग्रता का भाव था। उसे मेरी कार या सड़क पर अन्य ट्रैफिक की आवाज से कोई परेशानी नहीं थी, न ही रात के सन्नाटे को तोडने वाले हॉर्न और बीप ने परेशान किया। उसकी आंखें उसकी किताब पर केंद्रित थीं और इसमें कोई संदेह नहीं था कि उसका मन उसमें लिखे विषय-वस्तु पर था। वह एक सार्वजनिक स्थान पर बैठी थी, लोगों की निगाहों का सामना कर रही थी, जिसमें से कुछ उत्सुक, कुछ पूछताछ करने वाले, कुछ जिज्ञासु और कुछ सीधे-सादे लोग थे लेकिन उसके लिए, ये आंखें परेशान नहीं कर रही थीं क्योंकि उसकी आंखें तो उसकी किताब पर थीं! और जब मैंने इस छोटी लड़की को देखा, तो मेरा मन अपने इस देश के बारे में सोचने लगा। एक ऐसा देश जहां बुद्धिजीवी मौखिक द्वंद्व और शब्दों की लड़ाई लड़ते हैं, जहां मूर्खतापूर्ण और बेतुके विचारों को गहराई से समझाने के लिए तर्कसंगत सोच का उपयोग किया जाता है और जहां लेखक उन मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करते हैं जो वास्तव में गैर-मुद्दे हैं। जब हमें इन बच्चों की देखभाल करनी चाहिए, तो वे मंद रोशनी के नीचे ज्ञान इकट्ठा करने में इतने व्यस्त हैं जो उनकी दिशा में इतनी कंजूसी से फैंकी जाती है। हम ऐसे बच्चों को भूल जाते हैं। हमारे राजनेता जो तय करते हैं कि उन्हें क्या पढना है। जब हम इतिहास और तथ्यों को बदल देते हैं, यह महसूस किए बिना कि वे अपना सारा समय और इरादा ज्ञान और सच्चाई से पोषित होने के लिए लगा रहे हैं, न कि किसी राजनीतिक पार्टी की नकली प्रयोगशाला में बनाए गए नकली तथ्यों से। कल वह छोटी सी बच्ची, जो लैंपपोस्ट के नीचे पढ़ रही है, अपनी कक्षा में उस पर तब हंसी उड़ाई जा सकती है जब वह हमारे प्राचीन अंतरिक्षयानों, रॉकेटों और अंतर-ग्रहीय लेन-देन के बारे में अजीबो-गरीब काल्पनिक कहानियां लिखेगी। कल, वह छोटी सी बच्ची खुद को नौकरी पाने के लिए खुद को बुरी तरह से अयोग्य पाएगी क्योंकि शिक्षा मंत्रालय ने हमारे देश के बच्चों को शिक्षित करने की बजाय प्रचार सामग्री खिलाने का फैसला किया है। इस देश में बहुत-सी बीमारियां हैं, लेकिन अगर हम इस एक क्षेत्र (शिक्षा) पर ध्यान केंद्रित कर सकें, जिसका काम अगली पीढ़ी को सच्चाई और तथ्य देना है, न कि काल्पनिक कहानियां तो हम उस छोटी सी बच्ची और उन लाखों अन्य बच्चों के साथ न्याय कर पाएंगे जो स्ट्रीट लाइट या अपने घरों में किसी मंद लैंप के नीचे पढ़ते हैं! उस छोटी सी बच्ची ने अपनी किताब बंद की और सपनों की तरह दूर तक देखते हुए जम्हाई ली। मुझे उम्मीद थी कि जब वह एक बेहतर कल का सपना देख रही थी, तो हमारे अधिकारी अपने संकल्प के साथ उसे वह देंगे जिसकी वह हकदार थी; एक ऐसी शिक्षा जो उसके महान प्रयास के लायक थी.

सैलानियों का हब बन रहा है उत्तर प्रदेश

उमेश चतुर्वेदी

देश का दिल है उत्तर प्रदेश। भगवान राम और कान्हा की जन्मस्थली इसी प्रदेश में हैं। बाबा भोलेनाथ की नगरी, तीन लोकों में न्यारी काशी नगरी भी इसी प्रदेश में है। नाथ संप्रदाय के प्रमुख गुरू गोरखनाथ की नगरी भी इसी प्रदेश में है। अट्ठासी हजार ऋषियों ने जिस नैमिषारण्य में बैठकर देवताओं में श्रेष्ठ कौन है, जैसे महत्वपूर्ण प्रश्न पर विचार किया था, वह तीर्थस्थल भी इसी प्रदेश में है। और तो और, तीर्थों का तीर्थ प्रयागराज भी उत्तर प्रदेश में ही है। भगवान बुद्ध ने जिस सारनाथ में अपना पहला उपदेश दिया था, वह भी यहीं है। जिस कुशीनगर में उन्होंने निर्वाण लिया, वह भी यहीं है। तीर्थ स्थलों की जहां भरमार हो, वहां सैलानी और तीर्थयात्री ना आएं, तो अचम्भा ही माना जाएगा। ऐसा अचम्भा यहां होता रहा है। लेकिन सात साल के योगी शासन में यहां की स्थिति ऐसी बदली कि अब यहां तीर्थयात्रियों की भरमार है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की वजह से वाराणसी में विकसित काशी विश्वनाथ कोरीडोर के बाद तो वाराणसी भी पर्यटन और तीर्थ के मानचित्र में नए सिरे से उभर आया है। यही वजह है कि यहां सैलानियों की बाढ़ आ गई है। राज्य सरकार ने हाल ही में जो आंकड़े जारी किए हैं, उसके अनुसार पिछले साल राज्य में 48 करोड़ पर्यटक आए थे। यह संख्या राज्य की कुल आबादी की दोगुनी से दो करोड़ ज्यादा है। दुनिया में जहां भी पर्यटन ज्यादा है, वहां सबसे ज्यादा सैलानी सैर-सपाटे के लिए आते हैं। जबकि उत्तर प्रदेश आने वाले ज्यादातर पर्यटक आध्यात्मिक पर्यटन के लिए आए थे। साल 2023 में अकेल काशी आने वाले तीर्थयात्रियों और सैलानियों की संख्या 10 करोड़ से अधिक थी। जबकि मथुरा-वृंदावन में साढ़े सात करोड़ और अयोध्या में पांच करोड़ से ज्यादा

पर्यटक पिछले साल आए। 500 वर्षों के बाद अयोध्या में श्रीराम के विराजमान होने के बाद यहां आने वाले तीर्थयात्रियों की संख्या कई गुना बढ़ गई है। यहां प्रतिदिन करीब डेढ़ से दो लाख पर्यटक आ रहे हैं। इन तथ्यों से राज्य के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का उत्साहित होना स्वाभाविक है। तीर्थयात्रियों और आम सैलानियों में एक अंतर होता है। आम सैलानियों की तुलना में तीर्थयात्री प्रकृति और ईश्वर के प्रति अलग तरह की आस्था रखते हैं। शायद यही वजह है कि अब योगी सरकार राज्य में इको टूरिज्म की संभावनाओं में राज्य का भविष्य देखने लगी है। ऐसी संभावनाओं वाले तीर्थस्थलों में सबसे ज्यादा लखनऊ के नजदीक हैं। जिनमें नैमिषारण्य और चित्रकूट हैं। इसी तरह शुकतीर्थ, विंध्यवासिनी धाम, मां पाटेश्वरी धाम, मां शाकंभरी धाम सहारनपुर, बौद्ध तीर्थ स्थल कपिलवस्तु, सारनाथ, कुशीनगर, श्रावस्ती, संकिसा, जैन व सूफी परंपरा से जुड़े स्थलों में भी आध्यात्मिक तीर्थाटन की संभावनाएं ज्यादा है। उत्तर प्रदेश में मानव सृष्टि और जीव सृष्टि के उद्गम स्थल के भी प्रमाण मिलते हैं। सोनभद्र के फासिल्स पार्क की आयु उतनी ही है, जितनी जीव सृष्टि की है। लगभग डेढ़ सौ करोड़ वर्ष पूर्व के फासिल्स वहां पाए जाते हैं। ऐसे अनेक स्थल, प्राकृतिक सरोवर, ताल यहां मिलेंगे। यहां का करीब 15 हजार वर्ग किमी का क्षेत्रफल केवल वन संपदा है। यूपी में पौराणिक काल के वन हैं। यूपी के तराई क्षेत्र के बहराइच, लखीमपुर खीरी, श्रावस्ती, बलरामपुर और पीलीभीत में वन सुरक्षित हैं। इन वनों में भी घूमने वालों का अब तांता लगा रहता है। इसी तरह चूका, दुधवा, पीलीभीत टाइगर रिजर्व आने वाले टूरिस्टों की भीड़ बढ़ रही है। इसे देखते हुए चित्रकूट व बिजनौर के अमानगढ़ टाइगर रिजर्व को का विकास किया जा रहा है। उत्तर प्रदेश में आध्यात्मिक पर्यटन के साथ ही के साथ ही हैरिटेज व ईको टूरिज्म की संभावनाओं को देखते हुए उनके प्रति आकर्षण बढ़ाने की राज्य की ओर से कोशिश तेज की जा चुकी है। उत्तर प्रदेश आने वाले तीर्थयात्रियों और सैलानियों का मनोरंजन हो, उनका ज्ञान बढ़े, अतीत व इतिहास के साथ उन्हें जुड़ने का अवसर प्राप्त हो, इस दिशा में भी काम किए जा रहे हैं। इसे देखते हुए राज्य में उत्तर प्रदेश ईको टूरिज्म डेवलपमेंट बोर्ड गठित किया जा चुका है। इस दिशा में काम को आगे बढ़ाते हुए लखनऊ में कुकरैल के पास नाइट सफारी बनाया जा रहा है।

इसके पहले लगभग विलुप्त हो चुकी कुकरैल नदी को जीवित करने की तैयारी है। कभी कुकरैल गोमती की सहायक नदी थी। कुकरैल नदी को लोगों ने कब्जा करके नाला बनाकर रख दिया है। सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद इस पर हुए आठ हजार से अधिक अनधिकृत कब्जों को हटा जा चुका है। इसका असर दिख रहा है कि जब गर्मी में जल स्रोत सूख रहे थे, तब कुकरैल में जल के नए स्रोत बन रहे थे। ध्यान रखना चाहिए कि जब सैलानी आते हैं तो अनेक लोगों के लिए रोजगार सृजन होता है। ईको टूरिज्म के क्षेत्र में लोगों ने अलग-अलग कार्य प्रारंभ किए हैं। सोहगीबरवा, दुधवा, चूका, पीलीभीत टाइगर रिजर्व के क्षेत्र में लोग आ रहे हैं और प्रकृति को देखकर खुद को समझ रहे हैं। तीर्थयात्रियों और सैलानियों को लुभाने के लिए तीर्थस्थलों और पर्यटन केंद्रों की कनेक्टिविटी बढ़ाने की कोशिश हो रही है। लखीमपुर में पुरानी एयरस्ट्रिप का एयरपोर्ट के रूप में विकास करने की तैयारी है। पिछले साल यहां के लिए होलीडे ट्रेन चलाई गई थी। इसके साथ ही जगह-जगह स्थानीय निवासियों को गाइड के रूप में प्रशिक्षित करने की तैयारी है। इससे उन्हें रोजगार मिलेगा और तीर्थयात्रियों और सैलानियों का ज्ञानवर्धन भी होगा। पर्यटन न केवल मनोरंजन का माध्यम बन सकता है, बल्कि आर्थिक समृद्धि को बढ़ावा देने में भी मददगार हो सकता है। इसे देखते हुए राज्य के हैरिटेज टूरिज्म स्थलों मसलन बुंदेलखंड के किलों या जहां-तहां पड़ीं ऐतिहासिक इमारतों का ना सिर्फ विकास हो रहा है तो कहीं- कहीं उन्हें होटल या पर्यटन केंद्र के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है या उनका विकास किया जा रहा है। सैलानियों की सहूलियत और स्थानीय लोगों के रोजगार को बढ़ावा देने के लिहाज से काशी, अयोध्या, मथुरा-वृंदावन में स्प्रिचुअल दृष्टि से होम स्टे की व्यवस्था करने की तैयारी है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में भी रोजगार सृजन की संभावना बनेगी। बांदा के कलिंजर, जालौन व बस्ती में ऐसे कार्यक्रम प्रारंभ हो चुके हैं। पीलीभीत, खीरी, बहराइच, सोनभद्र, चंदौली, चित्रकूट समेत कई दूसरे जनपदों में भी ऐसी संभावना मूर्त रूप ले सकती है। राज्य के इको, स्पिरिचुअल और हैरिटेज तीनों तरह के पर्यटन को एक साथ जिस तरह विकसित किया जा रहा है, एक जनपद, एक उत्पाद को जिस तरह बढ़ावा दिया जा रहा है, अगर ईमानदारी पूर्वक इन योजनाओं पर काम हो, पूरे सूबे में सैलानियों की बाढ़ और बढ़ेगी। हर आने वाला सैलानी जब यूपी आएगा तो यूपी को कुछ देकर ही जाएगा। यूपी की आर्थिकी को नई गति देगा। घनी जनसंख्या वाले राज्य की अर्थव्यवस्था को तेजी देगा। इसके लिए राज्य की सड़कों को और बेहतर बनाना पड़ेगा। कानून-व्यवस्था के मोर्चे पर रह गई खामियों को दूर करना होगा और लोगों को भरोसा दिलाना होगा।

झगड़ा शांत करवाने गए पड़ोसी की हत्या

चाकू से सीने में वार, पुलिस ने अरोपी के पिता को हिरासत में लिया, दो ओरोपी फरार

मीडिया ऑडीटर, रायपुर एजेंसी। रायपुर के कबीर नगर इलाके में मामूली बात पर एक युवक की हत्या कर दी गई है। अवधपारा सोनड़ोगरी में अलताब खान के परिवार में विवाद हो रहा था। पड़ोस में रहने वाले मुकीम खान ने इगड़ा कर रहे पड़ोसियों को विवाद ना करते हुए शांत रहने की समझाइश दी । इतना कहते ही पड़ोस में रहने वाले अलताब खान और उसके बेटों ने मुकीम पर चाकू से हमला कर दिया और उसके मौके पर ही मौत हो गई।

दरअसल यह पूरा मामला 29 जून की रात करीब 9 से 10 बजे का बताया जा रहा है। कबीर नगर पुलिस ने अलताब खान को हिरासत मे ले लिया है और उससे पुछताछ की जा रही है। वही उसके दो आरोपी बेटे फ्रार हो गए है। जिसकी तलाश में पुलिस जुट गई है।

सीने और हाथ में चाकू से वार किया: कबीर नगर थाना प्रभारी दीपेश जायसवाल ने बताया कि पड़ोसी घर झगड़ा शांत करवाने और आपस-में झगड़ा ना करने कहने पर पड़ोसियों ने मुकीम खान की हत्या कर दी। जायसवाल ने बाताया मुकीम की उम्र 48 साल थी। लड़ाई के दौरान अलताब के बेटों ने मृतक के सीने और हाथ पर चाकू से वार कर दिया ।

परिजन जब मुकीम को अस्पताल लेकर पहुंचे तो डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। प्रभारी ने बताया कि शव को पोस्ट मार्टम कर परिजनों को सौप दिया गया है। वही इस मामले की टीम तफ्तीश कर रही है।

स्टील प्लांट में मिला युवक का शव

ब्लास्ट फर्नेस के पैनल के पास वायर के बीच फंसा, चोरी के वक्त करंट लगने की आशंका

मीडिया ऑडीटर, भिलाई एजेंसी। स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) के भिलाई स्टील प्लांट में एक युवक की लाश मिली है। बताया जा रहा है कि ब्लास्ट फर्नेस 7 के सब स्टेशन 15 एफ के पैनल में शव केबल वायर के बीच फंसा हुआ था। आशंका जताई जा रही है कि वह चोरी करने घुसा और करंट की चपेट में आने से उसकी मौत हो गई है। पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक बीएसपी के ब्लास्ट फर्नेस 7 के सब स्टेशन 15 एफके पैनल की दीवार टूटी पाई गई है। इसलिए आशंका जताई जा रही है कि पैनल की दीवार को तोड़कर

व्यक्ति चोरी करने की नीयत से अंदर घुसा होगा।

सीआईएसएफ की सुरक्षा में बड़ा सेंध: बीएसपी में जो घटना हुई वो सीआईएसएफ की सुरक्षा पर सवाल खड़ा करता है। बीएसपी के मजदूर यूनियन के एक नेता ने बताया कि भिलाई स्टील प्लांट की सुरक्षा की जिम्मेदारी सीआईएसएफ को दी गई है। वहां सैकड़ों की संख्या में जवान हर समय सुरक्षा ड्यूटी पर मुस्तैद रहते हैं। इसके बाद भी प्लांट के अंदर से लोग चोरी कर ले जा रहे हैं, जिससे सवाल उठ रहे हैं।

रायपुर-भिलाई सहित कई जिलों में झमाझम बारिश

मीडिया ऑडीटर, रायपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ में मानसून के बीच झमाझम बारिश का दौर जारी है। रायपुर, भिलाई सहित कई जिलों में शाम से फिर बारिश शुरू हो गई है। वहीं कोरबा में पिछले 3 दिनों से रुक-रुक कर हो रही बारिश थम गई है, लेकिन जलभराव की स्थिति बनी हुई है। शारदा विहार वार्ड-12, चिमनी भट्टा में कई घरों में पानी घुस गया। निगम की टीम यहां नालों की सफाई के लिए पहुंची है।

मौसम विभाग ने सरगुजा और बिलासपुर संभाग में भारी बारिश का यलो अलर्ट जारी किया है। अन्य संभागों में हल्की बारिश के आसार हैं। इस साल जून के कोटे की सिर्फ70 फीसदी ही बारिश हुई। यानी जून में 30: कम बारिश हुई। जो पिछले साल की तुलना से 17: कम है। मौसम विभाग के मुताबिक प्रदेश में जून तक 193.5 मिली बारिश होनी थी।

यूपी के युवक ने छत्तीसगढ़ की महिला से किया रेप

होटल में न्यूड फोटो-वीडियों बनाया, फिर पीड़िता के परिवार वालों को भेज दिया

मीडिया ऑडीटर, रायपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ के रायपुर के एक होटल में आरोपी ने महिला को बहला फुसलाकर बुलाया और रेप की वारदात को अंजाम दिया। इस दौरान आरोपी ने महिला का न्यूड फोटो वीडियो भी बना लिया। पूरा मामला गंज थाना क्षेत्र का है।

15 जून को पीड़िता ने गंज थाने में आरोपी रामनरेश गुप्ता के खिलाफ लिखित शिकायत दर्ज कराई।14 जून को आरोपी ने उसे मिलने के लिए स्टेशन रोड रायपुर स्थित होटल बुलाकर उससे शारीरिक संबंध बनाया।

आरोपी ने जबरदस्ती करके पीड़िता पर शादी का दबाव डाला। शादी नहीं करने पर न्यूड वीडियो फोटो को पीड़िता के परिवार वालों के वॉट्सऐप पर भेज दिया। पुलिस ने लिखित शिकायत पर

धारा 376 (2) (एन),509(ख) दर्ज किया है।

यूपी से आरोपी को किया गिरफ्तार: महिला की शिकायत के बाद पुलिस ने आरोपी की तालाश तेज की। मोबाइल लोकेशन के आधार पर पुलिस ने यूपी के चित्रकूट में आरोपी को पकड़ा। कड़ी मशक्कत के बाद पुलिस ने आरोपी रामनरेश गुप्ता (34 साल) को ढूंढ निकाला और रायपुर लेकर आई ।

पुलिस ने आरोपी से पूछताछ की। इस दौरान आरोपी ने जुर्म कबूल कर लिया, जिसके बाद आरोपी को कोर्ट में पेश किया गया। कोर्ट ने आरोपी को जेल भेज दिया है। पुलिस ने बताया कि आरोपी रामनरेश गुप्ता कुर्वी जिला चित्रकूट ,उत्तरप्रदेश का रहने वाला है।

देसी शराब की बोतल में मिल रहे कीड़े

ग्राहकों ने किया हंगामा, कहा- बेची जा रही मिलावटी शराब

मीडिया ऑडीटर, कोरबा एजेंसी। छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले में देसी शराब की बोतल में कीड़े मिल रहे हैं। सोमवार को रामपुर देसी शराब दुकान के बाहर ग्राहकों ने हंगामा शुरू कर दिया। एक नहीं बल्कि कई बोतलों में कीड़े पाए गए। शराब की बोतलों के ढक्कन भी पहले से खुले हुए मिले। लोगों का कहना है कि यहां मिलावटी शराब बेची जा रही है।

अमरैया पारा निवासी रामेश्वर कुमार ने बताया कि वह काम करने जा रहा था। इस दौरान वह रामपुर स्थित देसी शराब दुकान से देसी शराब लिया। शराब लेने के बाद कुछ दूरी पर उसे बोतल के अंदर कीड़ा नजर आया। जिसे देखकर वह हैरान रह गया। इसके शिकायत उसने देसी शराब दुकान के मैनेजर से की।

सेल्समैन बोले- हम कुछ नहीं कर सकते: लोगों ने कहा कि जब उन्होंने सेल्समैन को कीड़ा मिलने और बोतल का ढक्कन खुला होने की जानकारी दी तो कहा गया कि हम कुछ नहीं कर सकते। सरकार पैक करवा कर भेजती है, जिसे हम बेचते हैं।

मिलावटी शराब बेचने का आरोप: एक शख्स ने देसी शराब दुकान परिसर में बड़ी संख्या में पड़े ढक्कन को दिखाते हुए बताया कि बोतल के ऊपर यह ढक्कन सिर्फरख दी जाती है। इसकी सील टूटी होती है। हमे संदेह है कि मिलावटी शराब बेची जा रही है।

पहले भी सामने आ चुके हैं मामले: शराब में कीड़े और मिलावट का यह कोई पहला मामला नहीं है। इससे पहले भी हरदी बाजार, अमरेली समेत अन्य कई देसी और अंग्रेजी शराब दुकान में मामले आ चुके हैं। जिसे लेकर संबंधित विभाग ने कार्रवाई भी की थी।

असली नोट के बदले 5 गुना नकली नोट की डील

जशपुर में युवक गिरफ्तार, 3 भागे, 75 हजार के जाली नोट बरामद

मीडिया ऑडीटर, जशपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले में पुलिस ने 75 हजार के नकली नोट के साथ युवक को गिरफ्तार किया है। आरोपी के पास से 49 हजार के असली नोट भी जब्त किए गए हैं। वहीं 3 आरोपी भागने में सफल रहे। युवक ओडिशा की पार्टी से नकली नोट लेकर छत्तीसगढ़ में खपाने की फ्राक में था। मामला बागबहार थाना क्षेत्र का है। एसपी शशि मोहन सिंह के अनुसार सूचना मिली कि बागबहार क्षेत्र के ग्राम चिकनीपानी के भरारी नाला के पास सफेद रंग की कार में कुछ लोग नकली नोट खपाने की फ्राक में थे। कार में आरोपी सम्पत कुमार टोप्पो और उसके साथी बैठे हुए थे।

पुलिस ने घेराबंदी कर पकड़ा, 3 भागने में कामयाब: सूचना के आधार पर बागबहार पुलिस की टीम ने घेराबंदी की। इसी दौरान कार में सवार 3 युवकों को पुलिस के आने की भनक लग गई। तीनों मौका पाकर जंगल की ओर भाग गए। एक युवक कार की सीट पर बैठा मिला। पुलिस टीम ने कार की तलाशी ली।

आरोपी ने पूछताछ में किए कई महत्वपूर्ण खुलासे: तलाशी के दौरान पुलिस ने ड्राइवर सीट के पीछे रखे बैग से 75 हजार 500 रुपए के नकली नोट जब्त किए। साथ ही 49 हजार रुपए के असली नोट भी बरामद किए गए हैं। आरोपी ने पूछताछ में कई चौंकाने वाले खुलासे किए।

असली नोट के बदले 5 गुना नकली नोट देने का लालच: आरोपी सम्पत कुमार टोप्पो ने बताया कि उसके साथी ने कहा था कि ओडिशा की एक पार्टी असली नोट के बदले 5 गुना नकली नोट देगी। यदि नकली नोट का व्यवसाय करना है तो पैसे की व्यवस्था करो। साथी के कहने पर 29 जून को वह 50 हजार रुपए लेकर आया था।

50 हजार के बदले दिए 75 हजार के नकली नोट: ओडिशा की पार्टी ने उसे दूसरे दिन आने को कहा। आरोपी 30 जून को साथियों के साथ भरारी नाले के पास पहुंचा। नाले के पास ओडिशा के व्यक्ति पहले से आए हुए थे। सैंपल दिखाने के बाद उन्होंने 500-500 रुपए के 75 हजार के नकली नोट दिए। जिसे आरोपी कार में रखा हुआ था।

फ्रार आरोपियों को गिरफ्तार करने बनाई स्पेशल टीम: एसपी शशि मोहन सिंह ने बताया कि बागबहार पुलिस ने नकली नोट के साथ सम्पत कुमार टोप्पो को गिरफ्तार किया है, जो अंबिकापुर के कोरिमा गांव का रहने वाला है। आरोपी ने पूछताछ में कई महत्वपूर्ण जानकारी दी है। फ्रार आरोपियों को गिरफ्तार करने के लिए स्पेशल टीम बनाई गई है।

गलियां, वर्कशॉप और सड़कें लबालब

पहली ही बारिश में खुली निगम की पोल, घरों में घुसा पानी, कचरों से नालियां जाम

मीडिया ऑडीटर, कोरबा एजेंसी। छत्तीसगढ़ के कोरबा में जमकर बारिश हुई है। घर के अंदर पानी, घर के बाहर पानी, जहां देखो वहां पानी ही पानी नजर आ रहा है। गली मोहल्ले की सड़कों पर बाढ़ जैसे हालात हैं। कोरबा नगर निगम क्षेत्र के शारदा विहार वार्ड 12 चिमनी भट्ठा के लोग परेशान हैं। पहली ही बारिश ने निगम के सारे दावों की पोल खोल दी है। हर साल की तरह वार्ड न.12 चिमनी भट्ठा फिर जलमग्न है। नालियों में भरा कचरा और सीवर की गंदगी लोगों के घरों तक पहुंच गई। घरों में बारिश का पानी घुसने से लोगों को भारी परेशानी झेलनी पड़ी।

12 से ज्यादा घरों में घुसा पानी: स्थानीय लोगों ने बताया कि सालों पुरानी इस समस्या का समाधान न कोई सरकार निकाल पाई और न ही नगर निगम। रविवार रात को हुई बारिश में यह बात एक बार फिर साबित हुई। दर्जनों घरों में बरसाती पानी घरों में घुसा। पहले ही बारिश में जिस तरह से जलभराव हुआ, जिसके चलते रात भर जगना पड़ा।

सेक्टर 5 शॉपिंग काम्प्लैक्स में घुसा पानी: यही हाल बालको नगर के अन्दर स्थित सेक्टर 5 शॉपिंग काम्प्लैक्स का है। सेक्टर 5 कॉलोनी स्थित बालको कॉलोनी और नेहरू नगर बस्ती से मुख्य नाली निकली है। नाली के ऊप दुकानों का निर्माण किया गया है, जहां पानी घुस गया है।

नाली जाम होने की वजह से पानी घरों में घुसा: स्थानीय लोगों का कहना है कि नाली ऊपर है, जिससे नाली बार-बार जाम हो जा रही है। बताया जा रहा है कि नाली जाम होने की वजह नाली के मोड पर त्रिभुवन प्रसाद राठौर ने दुकान का निर्माण किया है, जिससे कचरा एकत्रित हो जा रहा।

मारुति शो रूम की वर्कशॉप के यार्ड में घुसा पानी: मुड़ापार रिंग रोड पर मारुति शो रूम की वर्कशॉप के यार्ड में भी जल भराव देखने को मिला, जिससे यार्ड में रखे सभी सोल्ड गाड़ियों को कर्मचारियों ने बाहर निकाला। जहां यार्ड तालाब में तब्दील नजर आया। इसकी सूचना नगर निगम को दी गई है।

महादेव सट्टा ऐप केस में 8 सटोरिए गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, भिलाई एजेंसी। दुर्ग की एसीसीयू टीम ने हैदराबाद में महादेव सट्टा ऐप का पैनल चलाने वाले 8 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। सभी आरोपी भिलाई के कैंप, कुरुद और 18 नंबर रोड के रहने वाले हैं। एसीसीयू की एडिशनल एसपी त्रप्ति मिश्रा के नेतृत्व में तेलंगाना गई दुर्ग पुलिस की टीम ने सभी आरोपियों रंगे हाथ गिरफ्तार किया। पुलिस सभी को रिमांड में लेकर दुर्ग आ गई है।

एएसपी सिटी सुखनंदर राठौर ने बताया था कि एसीसीयू की टीम हैदराबाद एक मामले के आरोपियों को पकड़ने गई थी। वहां उन्हें पता चला की सुपेला थाने में महादेव सट्टा के मामले के आरोपियों को लोकेशन हैदराबाद में मिला है। इसके बाद क्राइम की टीम एक्टिव हो गई।

क्राइम की टीम ने बताए गए लोकेशन में छापेमारी की तो वहां से 8 लड़के महादेव सट्टा एप का पैनल चलाते हुए रंगे हाथ गिरफ्तार किए गए। इसमें दो नाबालिग लड़के भी शामिल हैं। जानकारी के मुताबिक पुलिस ने हैदराबाद से काफी बड़ा रैकेट का पर्दाफाश किया है।

वहां आरोपियों के पास से बड़ी संख्या में मोबाइल फोन, लैपटॉप, सट्टे का बहीखाता, बैंक खाते, एटीएम और अन्य सामानों की जब्ती की गई है।

डॉक्टर को ब्लैकमेल कर पांच लाख रुपये की ठगी

न्यूड कॉल कर लिया स्क्रीन शॉट, यूट्यूब में वीडियो अपलोड कर हटाने के नाम लिए रूपये

मीडिया ऑडीटर, सरगुजा एजेंसी। सरगुजा के डॉक्टर को ठगों ने ब्लैकमेल कर पांच लाख रुपये वसूल लिए। एक युवती ने डॉक्टर को सोशल साइट पर फ्रेंड बनाया, फिर न्यूड कॉल कर स्क्रीन रिकार्ड कर वीडियो यू-ट्यूब पर अपलोड कर दिया। स्वयं को दिल्ली का आईपीएस एवं पुलिस अधिकारी बता ठगों ने वीडियो हटाने के नाम पर पांच लाख रुपये की ठगी कर ली। घटना की रिपोर्ट गांधीनगर थाने में दर्ज कराई गई है। जानकारी के मुताबिक, अंबिकापुर के डॉक्टर ठटै राम ने गांधीनगर थाने में ठगी की शिकायत दर्ज कराई है। पेशे से चिकित्सक डा. राम के फेसबुक एकाउंट पर 06 जून 2024 को श्रुती कुमारी के नाम से फ्रेंड रिक्वेस्ट आया था। डा. राम ने उसे पूर्व सहपाठी होना सांचकर एक्सेप्ट कर लिया। इसके बाद फेसबुक प्रोफाईल धारक के द्वारा मोबाईल से वाट्सअप मैसेज कर वीडियो काल करने को कहा गया।

वीडियो कॉल, स्क्रीन रिकार्ड कर बनाया वीडियो: डा. राम ने कई बार वीडियो कॉल करने के बाद भी लड़की का कॉल रिसिव्ह नहीं किया एवं उसका पूरा परिचय पूछा। उसने द्वारा बार-बार बोलने पर डा. राम ने वीडियो कॉल एक्सेप्ट किया तो स्क्रीन पर एक निवस्त्र लड़की खड़ी थी। डा. राम ने बताया कि उन्होंने तत्काल वीडियो काल बंद कर दिया। इस दौरान उसका स्क्रीन शॉट व स्क्रीन रिकार्ड ठगों ने कर लिया।

स्क्रीन शॉट भेजकर मांगा पैसा: जिस नंबर से उन्हें वीडियो कॉल आया था, उसी नंबर से डा. राम को स्क्रीन शॉट भेजा गया। इसमें एक तरफडा. राम का चेहरा एवं दूसरी ओर निवस्त्र लड़की खड़ी दिखाई दी। मोबाइल धारक ने डॉक्टर को धमकाया कि वह पैसे भेजे नहीं तो उसका वीडियो यू ट्यूब पर वायरल कर देंगे। डा. राम ने पैसे भेज दिए। इसके बाद भी कई नंबरों से उक्त वीडियो यू ट्यूब में अपलोड कर दिया गया।

पुलिस अधिकारी बनकर ठगी: डा. राम को कई नंबरों से उनका वीडियो यू ट्यूब पर अपलोड किए जाने के मैसेज मिले। उनके नंबर पर स्वयं को दिल्ली पुलिस को आईपीएस संजय अरोरा बताकर अज्ञात व्यक्ति ने कॉल किया एवं बताया कि उसका वीडियो यू ट्यूब पर अपलोड हो गया है। वह वीडियो डिलिट कर बचा सकता है। इसे बाद दिल्ली साइबर क्राइम ब्रांच के अमित कुमार एवं उत्तम राठौर नाम बताते हुए अज्ञात लोगों ने काल कर उससे पैसे मांगे। डा. राम से ठगों ने अब तक पांच लाख रुपये से अधिक की ठगी कर ली है। शिकायत पर गांधीनगर पुलिस ने अज्ञात युवती सहित चार मोबाइल नंबर धारकों के खिलाफ 384 आईपीसी के तहत अपराध दर्ज कर लिया है। गांधीनगर थाना प्रभारी प्रदीप जायसवाल ने बताया कि शिकायत पर अपराध दर्ज हुआ है। मामले की जांच की जा रही है।

पत्नी से अवैध-संबंध के शक में पेट्रोल-पंप संचालक को पीटा

लूट के बाद रास्ते में छोड़कर भागे आरोपी, पति सहित 3 बदमाश गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर एजेंसी। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में पेट्रोल पंप के मालिक के साथ पत्नी का अवैध संबंध होने की आशंका पर उसके ही कर्मचारी ने अपने साथियों के साथ मिलकर अपहरण कर जमकर पीटा, फिर मोबाइल लूटकर कार के ड्राइवर को भी पीटा। मोबाइल लूटकर रास्ते में ही छोड़कर भाग गए। पति समेत 3 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। मामला सिटी कोतवाली थाना क्षेत्र का है।

सीएसपी पूजा कुमार ने बताया कि जगमल चौक निवासी दुर्गा यादव (32) ने अपहरण की शिकायत की, जिसमें उसने बताया कि उसका पति भोला उर्फ शेखर यादव (47) बिल्हा मोड़ के पास स्थित पेट्रोल पंप में काम करता है, जिसके संचालक जीतू अग्रवाल हैं। पेट्रोल पंप के मालिक जीतू अग्रवाल अपने साथ दुर्गा, उसके पति भोला और बच्चों को वृंदावन घुमाने लेकर गया था। जहां भोला को दुर्गा और अपने मालिक जीतू अग्रवाल के बीच अवैध संबंध का शक हुआ। इससे गुस्साए भोला ने वापस लौटते समय कटनी के पास मालिक से विवाद किया। इससे नाराज जीतू अग्रवाल ने भोला को कार से उतार दिया और उसकी पत्नी दुर्गा और बच्चों को लेकर शहर आ गया।

घर पहुंचने पर पत्नी से की मारपीट: दूसरे दिन 26 जून को भोला किसी तरह बिलासपुर पहुंचा। घर पहुंचने के बाद उसने अवैध संबंध की बात को लेकर अपनी पत्नी के साथ मारपीट की। उसकी पत्नी दुर्गा यादव ने इसकी जानकारी जीतू अग्रवाल दी, जिस पर जीतू अग्रवाल ने दुर्गा और उसके बच्चों को चकरभाठा स्थित एक होटल में रुकवा दिया। इधर भोला ने जीतू अग्रवाल को बातचीत करने के बहाने अपने घर बुलाया।

दोस्तों के साथ मिलकर अपहरण, मारपीट कर लूट लिए मोबाइल: जीतू अग्रवाल उसके घर पहुंचा, तब भोला ने अपने दोस्तों के साथ मिलकर जीतू अग्रवाल और ड्राइवर त्रिलोचन की जमकर पिटाई कर दी। इस दौरान दोनों का अपहरण कर उनकी कार में कोनी-रतनपुर रोड तरफलेकर गए।

इस दौरान उन्होंने जीतू का मोबाइल लूट लिए। रास्ते में सेंदरी के पास कार खराब होने पर दोनों को छोड़कर भाग गए। इस हमले में जीतू अग्रवाल और उसका ड्राइवर घायल हो गए, जिन्हें इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया।

कर्मचारी समेत तीन गिरफ्तार, एक आरोपी फरार: मामला सामने आने के बाद पुलिस ने जीतू अग्रवाल से पूछताछ की, जिसमें उसने घटना की जानकारी दी। उसने बताया कि सेंदरी के पास कार खराब होने पर भोला और उसके साथी उन्हें छोड़कर भाग निकले। अपहरण का मामला सामने आने पर पुलिस ने शेखर यादव और उसके साथियों की तलाश शुरू कर दी।

पुलिस ने मामले में भोला यादव, जगमल चौक निवासी रोहन श्रीवास उर्फ नान्हे (20) और देवरीखुर्द निवासी अजीत विश्वास (24) को गिरफ्तार किया है। उनके पास से जीतू अग्रवाल का मोबाइल भी बरामद किया गया है। वहीं एक अन्य आरोपी लल्ला यादव फ्रार है। पुलिस उसकी तलाश कर रही है।

25 राज्यों में बारिश का रेड अलर्ट

नई दिल्ली। मौसम विभाग ने देश के 25 राज्यों में आज और अगले 5 दिन बारिश का रेड अलर्ट जारी किया है। इनमें राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड, हिमाचल, पंजाब, हरियाणा, गुजरात, महाराष्ट्र, दिल्ली, बिहार, झारखंड, दक्षिण और नॉर्थ-ईस्ट के राज्य शामिल हैं। मौसम विभाग ने बताया कि मानसून अब देश के करीब सभी राज्यों में पहुंच गया है। अगले तीन दिन में यह राजस्थान, पंजाब और हरियाणा के बाकी बचे हिस्से को भी कवर कर लेगा। जून में देशभर में 165.3 एमएम की जगह 147.2 एमएम बारिश हुई है। यह सामान्य से 11 प्रतिशत कम है। महाराष्ट्र के उत्नागिरी जिले के चिपलूण स्थित शिव नदी में मगरमच्छों की संख्या बढ़ी है। बरसात में नदी के भरने की वजह से मगरमच्छ सड़क व बस्तियों की ओर आ रहे हैं। रविवार को लोनावला में एक ही परिवार के 5 लोग भुशी डैम में बह गए। इनमें एक महिला, 13 साल की लड़की, 6 साल की 2 बच्चियां और 4 साल का एक लड़का शामिल था। तीन के शव बरामद हुए हैं। रविवार को महाराष्ट्र, बिहार, राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, मध्य प्रदेश, नगालैंड, मणिपुर, मिजोरम और अरुणाचल प्रदेश समेत कई अन्य राज्यों में भारी बारिश हुई। गुजरात में बारिश से सूरत, भुज, वापी, भरूच और अहमदाबाद में सड़कों और घरों में पानी भर गया।

विधानसभा में बोले देवेंद्र फडणवीस- एक लाख से ज्यादा लोगों को सरकारी नौकरी देगी महाराष्ट्र सरकार

नई दिल्ली। महाराष्ट्र सरकार एक लाख से ज़्यादा लोगों को सरकारी नौकरियां देने वाली है। देवेंद्र फडणवीस का कहना है कि 57,452 आवेदकों को नियुक्ति पत्र दिए गए हैं। 2022 में महाराष्ट्र में एकनाथ शिंदे के नेतृत्व में नई सरकार बनने के बाद इन पदों पर भर्ती की प्रक्रिया शुरु हुई थी। डिप्टी सीएम फडणवीस ने कहा, इसका मतलब है कि हमारी सरकार एक 1 लाख 8 हजार उम्मीदवारों को नौकरी देगी। यह एक रिकॉर्ड है। पेपर लीक के खिलाफ भी कानून लागू किया जाएगा, यह कानून इसी सत्र में लागू होगा। हम छात्र संघ के साथ भी इस कानून पर चर्चा कर रहे हैं। फडणवीस का कहना है कि यह भर्ती पारदर्शी तरीके से हो रही है। इसके अलावा इस सत्र में प्रतियोगी परीक्षाओं में पेपर लीक के खिलाफ एक नया कानून भी लाया जाएगा। अब तक तरीकबन 19853 छात्रों को नियुक्ति पत्र दिए जाएंगे। इससे पहले 57452 छात्रों को नियुक्ति पत्र दिए जा चुके हैं। वहीं 31,201 पदों के लिए भर्ती प्रक्रिया 3 महीने में पूरी होगी।

आरएसएस प्रमुख भागवत का बयान - विविधताओं के बावजूद भारत एक राष्ट्र और एक समाज है

नई दिल्ली। संघ के प्रमुख मोहन भागवत ने सोमवार को कहा कि ऊपर से कुछ भी दिखता हो लेकिन मातृभूमि भारत के प्रति प्रेम भक्ति सर्वत्र है और विविधताओं के बावजूद भारत एक राष्ट्र और एक समाज हैं। संघ प्रमुख ने 'परमवीर चक्र% से सम्मानित वीर अब्दुल हमीद के गाजीपुर स्थित गांव धामूपुर में आयोजित एक कार्यक्रम में उन पर लिखी किताब का विमोचन किया। वर्ष 1965 के भारत-पाक युद्ध के नायक रहे वीर अब्दुल हमीद को पाकिस्तान के पैटन टैंकों को ध्वस्त करने और दुश्मनों को खदेड़ने के लिए जाना जाता है। उन्हें मरणोपरांत परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया था। पुस्तक विमोचन के बाद अपने संबोधन में संघ प्रमुख ने कहा, ''हमारे देश में इतनी सारी भाषाएं हैं, इतना बड़ा देश है, बेहद प्राचीन परम्पराएं हैं। जब हर व्यक्ति के अपने-अपने विचार हैं तो पूजा, परम्परा, सम्प्रदाय तो अनेक होंगे ही।%उन्होंने कहा, ''खान-पान, रीति-रिवाज भौगोलिक परिस्थितियों के अनुसार बदल जाते हैं। ये सारी विभिन्नताएं (विविधताएं) होने के बावजूद अपना देश हजारों वर्षों से एक राष्ट्र के रूप में चल रहा है और हम एक राष्ट्र तथा एक समाज हैं। भागवत ने कहा, ''इसके उदाहरण भी देखे जा सकते हैं। जब भी कोई देश हमारे वतन पर हमला करता है जैसा कि चीन और पाकिस्तान ने किया था। तो ऐसे हालातों में सभी देशवासी आपसी झगड़े भूलकर एक साथ खड़े हो जाते हैं क्योंकि हमारे मूल में यह एकता बसी है।

फ्रांस के संसदीय चुनाव में पिछड़े राष्ट्रपति

पहले चरण में कट्टरपंथी पार्टी आगे, ये जीती तो मर्जी से कानून नहीं बना पाएंगे मैक्रों

फ्रांस (एजेंसी)। फ्रांस में हुए नेशनल असेंबली के चुनाव में राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों की पार्टी पिछड़ गई है। फ्रांस के गृह मंत्रालय ने सोमवार को वोटिंग के रिजल्ट जारी किए। रिजल्ट के मुताबिक, दक्षिणपंथी पार्टी नेशनल रैली को सबसे ज्यादा 35.15त्न वोट मिले।

दूसरे नंबर पर वामपंथी न्यू पॉपुलर फ्रंट गठबंधन रहा। इसे 27.99त्न वोट मिले। वहीं, मैक्रों की रेनेसां पार्टी सिर्फ 20.76त्न वोट हासिल करने में कामयाब रही। रविवार को नेशनल असेंबली के 577 सीटों के लिए पहले चरण की वोटिंग हुई थी। दूसरे चरण की वोटिंग 7 जुलाई को होगी। 7 जुलाई के चुनाव में केवल वे ही उम्मीदवार खड़े हो सकते हैं, जिन्हें पहले चरण में 12.5 प्रतिशत से ज्यादा वोट मिला हो। नेशनल असेंबली में बहुमत के लिए किसी भी पार्टी को 289 सीटें जीतना जरूरी है। फ्रांस की संसद का कार्यकाल 2027 में खत्म होना था, लेकिन यूरोपीय संघ में बड़ी हार के कारण राष्ट्रपति मैक्रों ने समय से पहले इसी महीने संसद भंग कर दी थी।

दरअसल, मैक्रों सरकार गठबंधन के सहारे चल रही थी। उनके गठबंधन के पास सिर्फ 250 सीटें थीं और हर बार कानून पारित करने के लिए उन्हें अन्य दलों से समर्थन जुटाना पड़ता था। फिलहाल संसद में दक्षिणपंथी पार्टी नेशनल रैली (ह्रक्र) के पास 88 सीटें हैं। अमेरिकी न्यूज चैनल ष्टहृह्र ने अनुमान लगाया गया है कि दक्षिणपंथी पार्टी ह्रक्रदूसरे चरण की वोटिंग के बाद 577 सीटों में से 230-280 सीटें जीत करती है। वामपंथी हृस्नक्क को 125-165 सीटें मिल सकती है।

हारे तो भी पद पर बने रहेंगे मैक्रों: मैक्रों की रेनेसां पार्टी और उनके गठबंधन को महज 70 से 100 के बीच सीटें मिलने की संभावना है। नेशनल असेंबली के चुनाव में यदि मैक्रों की रेनेसां पार्टी हार भी जाती है तो मैक्रों पद पर बने रहेंगे। मैक्रों ने पहले ही कह दिया है कि चाहे कोई भी जीत जाए वे राष्ट्रपति पद से इस्तीफा नहीं देंगे।

दरअसल, यूरोपीय संघ के चुनाव में हार के बाद अगर मैक्रों की पार्टी संसद में भी हार जाती है तो उन पर राष्ट्रपति पद छोड़ने का दबाव बन सकता है। इसलिए मैक्रों ने पहले ही साफ कर दिया है कि वे अपना पद नहीं छोड़ेंगे। अगर संसदीय चुनाव में मरीन ली पेन की नेशनल रैली पार्टी बहुमत हासिल कर लेती है, तो मैक्रों संसद में बेहद कमजोर पड़ जाएंगे और वे अपनी मर्जी से कोई भी बिल पास नहीं करा पाएंगे।

फ्रांस में राष्ट्रपति और नेशनल असेंबली के चुनाव अलग-अलग होते हैं। ऐसे में अगर किसी पार्टी के पास संसद में बहुमत नहीं है तो भी राष्ट्रपति चुनाव में उस पार्टी का लीडर जीत हासिल कर सकता है। 2022 के चुनाव में इमैनुएल मैक्रों के साथ भी यही हुआ था। वे राष्ट्रपति पद का चुनाव जीत गए थे, लेकिन नेशनल असेंबली में उनके गठबंधन को बहुमत नहीं मिला था।

मैक्रों को चुनौती देने वाला महज 28 साल का: विपक्षी पार्टी नेशनल रैली को संसद में बहुमत मिलने की संभावना कम है। हालांकि, वह सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभर सकती है। यदि उसे बहुमत मिल जाता है तो संविधान के मुताबिक मैक्रों उस पार्टी से सीनेट के सांसद चुनेंगे। नेशनल रैली के नेता जॉर्डन बार्डेला सिर्फ 28 साल के हैं। उन्होंने कहा है कि यदि उनकी पार्टी को पूर्ण बहुमत नहीं मिलता है तो वे किसी भी सूरत में प्रधानमंत्री नहीं बनेंगे।बार्डेला ने कहा कि वे राष्ट्रपति मैक्रों के सहायक बनना नहीं चाहते। हालांकि अगर नेशनल रैली को बहुमत मिलता है तो फ्रांस में फिर से सह-अस्तित्व वाली सरकार बन सकती है। सह-अस्तित्व वाली सरकार का मतलब ऐसी सरकार, जिसमें विरोधी पार्टी के साथ मिलकर सरकार चलाई जाती है।

ऐसा पहले भी हो चुका है, जब घरेलू नीति प्रधानमंत्री के हाथ में होती थी, और विदेश एवं रक्षा नीति के फैसले राष्ट्रपति लेते थे। हालांकि फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने चेतावनी दी है कि दक्षिणपंथी पार्टियां देश को गृह युद्ध में झोंक सकती है।

राहुल गांधी का संसद में 90 मिनट का भाषण

नई दिल्ली। संसद सत्र के छठे दिन नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने मोदी सरकार और भाजपा को 20 से ज्यादा मुद्दों पर घेरा। उन्होंने हिन्दू, अग्निवीर, किसान, मणिपुर, नीट, बेरोजगारी, नोटबंदी, जीएसटी, एमएसपी हिंसा, भय, धर्म, अयोध्या, गुजरात, जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, अडाणी-अंबानी, प्रधानमंत्री और स्पीकर की चर्चा की। उन्होंने 90 मिनट के भाषण की शुरुआत संविधान की कॉपी दिखाकर की। भाषण के दौरान सत्ता पक्ष और विपक्ष में जमकर तू-तू, मैं-मैं हुई। राहुल ने अग्निवीर, पीएम मोदी के परमात्मा से डायरेक्ट कनेक्शन और किसानों के एमएसपी कानून की बात कही। इस पर पीएम 2 बार, शाह-राजनाथ 3-3 बार, शिवराज चौहान और भूपेंद्र यादव को एक-एक बार खड़े होकर टोका। राहुल के इतना कहने पर अमित शाह खड़े हुए। कहा, नियम इन पर लागू नहीं होता क्या। ये पूरी बीजेपी को हिंसा फैलाने वाला बता रहे हैं। हाउस ऑर्डर में नहीं है। सदन ऐसे नहीं चलेगा। राहुल गांधी ने कहा, किसानों ने ये कहा कि 16 लाख करोड़ उद्योगपतियों का कर्जा माफ हो सकता है तो हमारा भी थोड़ा सा कर दीजिए. किसान ने रूस्क्क मांगी। आपने कहा क्या। आपने कहा कि आपको ये नहीं मिलेगी। कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान बोले- ये गलत बयानी कर रहे हैं। एमएसपी पर खरीद जारी है। उनकी सरकार थी तब बताएं कि एमएसपी पर कितनी खरीद होती थी। ये सत्यापित करें कि एमएसपी पर खरीद नहीं हो रही। राहुल गांधी ने कहा कि एमएसपी विथ लीगल गारंटी सर, नॉट जस्ट एमएसपी। राजनाथ सिंह ने राहुल को गलत बयानी करके सदन को गुमराह नहीं करने के लिए कहा।

3 नए आपराधिक कानून लागू

नई दिल्ली। देश में अंग्रेजों के जमाने से चल रहे कानूनों की जगह 3 नए कानून भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता और भारतीय साक्ष्य अधिनियम 1 जुलाई से लागू हो गए हैं। इन्हें आईपीसी (1860), सीआरपीसी (1973) और एविडेंस एक्ट (1872) की जगह लाया गया है। कानूनों के लागू होने के बाद गृह मंत्री अमित शाह ने मीडिया को इन कानूनों की जानकारी दी। शाह ने कहा कि आजादी के 77 साल बाद क्रिमिनल जस्टिस सिस्टम अब पूरी तरह से स्वदेशी हो गया है। शाह बोले- अब दंड की जगह न्याय मिलेगा। मामलों में देरी की जगह स्पीडी ट्रायल होगा। साथ ही सबसे आधुनिक क्रिमिनल जस्टिस सिस्टम बनेगा। गृहमंत्री के मुताबिक देशभर में 22.5 लाख से ज्यादा पुलिसकर्मियों को नए क्रिमिनल जस्टिस सिस्टम की ट्रेनिंग 12 हजार से ज्यादा मास्टर ट्रेनर्स ने दी है। लोकसभा में 9.29 घंटे चर्चा हुई, उसमें 34 सदस्यों ने भाग लिया। राज्यसभा में 6 घंटे से ज्यादा चर्चा हुई। इसमें 40 सदस्यों ने भाग लिया। शाह ने कहा कि यह भी झूठा कहा जा रहा है कि विधेयक को सांसदों को बाहर भेजे जाने (निलंबित किए जाने) के बाद लाया गया। विधेयक को पहले ही कार्य मंत्रणा समिति के पास भेजा जा चुका था। इन कानूनों के लागू होने के साथ ही देश में सबसे पहला केस ग्वालियर में दर्ज हुआ। इस बात की जानकारी शाह ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में दी। उन्होंने कहा यह एफआईआर मोटर साइकिल चोरी की थी। जिसे 12.10 मिनट पर दर्ज किया गया था।

सिंगापुर में विपक्षी नेता प्रीतम सिंह पुन- 'वर्कर्स पार्टी के महासचिव निर्वाचित

नई दिल्ली। सिंगापुर के भारतीय मूल के विपक्ष के नेता प्रीतम सिंह को 'वर्कर्स पार्टी का महासचिव पुनः निर्वाचित किया गया है। पुनः निर्वाचित 'चेयरवुमैन सिल्विया लिम की अगुवाई में कुल 14 सदस्यों ने केंद्रीय कार्यकारी समिति (सीईसी) के लिए वोट दिया जो 'वर्कर्स पार्टी% की शीर्ष निर्णय निर्धारण संस्था है। सिंह (48) को रविवार को निर्विरोध चुन लिया गया। वह 2018 से पार्टी के महासचिव हैं। सिंह ने पत्रकारों से कहा, ''शानदार नतीजे। हम अगले दो साल इस सीईसी के साथ काम करने के लिए उत्साहित हैं। 'चैनल न्यूज एशिया ने सिंह के हवाले से कहा, ''यह उम्मीदवारी के बारे में नहीं था,।

प्रधानमंत्री ने असम के सीएम हिमंत से फोन पर की बात, पूर्ण सहयोग का दिया आश्वासन

असम। असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने सोमवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राज्य में बाढ़ की स्थिति की उनसे जानकारी ली और संकट से निपटने के लिए हर संभव सहायता का आश्वासन दिया। समूचे असम में बाढ़ की भीषण स्थिति है तथा मूसलाधार बारिश के कारण कई और जिले पानी में डूब गए हैं जिससे लाखों लोग प्रभावित हैं। हिमंत शर्मा ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स पर कहा कि, माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने कुछ समय पहले मुझे असम में बाढ़ की स्थिति के बारे में जानकारी लेने के लिए फोन किया। मैंने उन्हें बताया कि अरुणाचल प्रदेश और ऊपरी असम के कुछ जिलों में भारी बारिश के कारण असम इस साल बाढ़ की दूसरी लहर का सामना कर रहा है। उन्होंने राज्य सरकार द्वारा उठाए गए राहत कदमों से मोदी को अवगत कराया। असम में रविवार को बाढ़ की स्थिति और खराब हो गई। सैलाब के कारण दो और लोगों की मौत हो गई तथा आठ जिलों में 2.62 लाख से अधिक लोग बाढ़ से जूझ रहे हैं। इस बीच, केंद्रीय बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग मंत्री सर्बानंद सोनोवाल ने भी राज्य, विशेषकर डिब्रूगढ़ और तिनसुकिया जिलों में बाढ़ की स्थिति पर चर्चा करने के लिए शर्मा को फोन किया। शर्मा ने डिब्रूगढ़ के सांसद को प्रभावित लोगों को तत्काल राहत देने का आश्वासन दिया। मुख्यमंत्री ने कहा, हम डिब्रूगढ़ में स्थिति पर लगातार नज़र रख रहे हैं।

राहुल गांधी के बचाव में आईं बहन प्रियंका गांधी, बोलीं- वो कभी हिंदुओं का अपमान नहीं कर सकते

नई दिल्ली। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा ने सोमवार को कहा कि उनके भाई और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी कभी हिंदुओं का अपमान नहीं कर सकते और उन्होंने सदन में भारतीय जनता पार्टी एवं उसके नेताओं के बारे में बोला है। प्रियंका सोमवार को राष्ट्रपति के अभिभाषण पर लाए गए धन्यवाद प्रस्ताव पर राहुल गांधी के भाषण को सुनने संसद भवन पहुंची थीं। नेता प्रतिपक्ष के तौर पर राहुल गांधी ने सदन में पहली बार किसी प्रस्ताव पर अपनी बात रखी। राहुल गांधी ने सोमवार को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर देश में हिंसा, नफरत तथा डर फैलाने का आरोप लगाया और दावा किया कि ''ये लोग हिंदू नहीं हैं क्योंकि 24 घंटे हिंसा की बात करते हैं। उन्होंने राष्ट्रपति के अभिभाषण पर लाए गए धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा में भाग लेते हुए यह भी कहा कि हिंदू कभी हिंसा नहीं कर सकता, कभी नफरत और डर नहीं फैला सकता। राहुल गांधी ने जब भाजपा पर यह आरोप लगाया तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह ने आपत्ति जताते हुए कहा कि कांग्रेस नेता ने पूरे हिंदू समाज को हिंसक कहा है। इस बारे में पूछे जाने पर प्रियंका गांधी ने संसद परिसर में संवाददाताओं से कहा, '' मेरे भाई कभी हिंदुओं का अपमान नहीं कर सकते। उन्होंने बहुत स्पष्ट बोला है। उन्होंने भाजपा और भाजपा के नेताओं के बारे में बात की है।

आज अयोध्या जाएंगे बिहार के डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी

पटना। बिहार भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सह डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी 2 और 3 जुलाई को अयोध्या दौरे पर जाएंगे। वहां भगवान श्री राम के दर्शन करने के बाद वह अपना मुरेठा उतारेंगे। इसको लेकर पटना में बीजेपी कार्यालय के बाहर बड़ा पोस्टर लगाया गया है। पोस्टर पर लिखा गया है कि 3 जुलाई को श्री राम मंदिर अयोध्या में दर्शन कर सम्राट चौधरी श्री राम के चरणों में मुरेठा उतारेंगे। बता दें कि लव कुश के वंशज सम्राट चौधरी 2 जुलाई को सुबह 10ः00 बजे पटना से अयोध्या के लिए प्रस्थान करेंगे। सम्राट चौधरी करीब 21 महीने बाद अपनी पगड़ी (मुरेठा) उतारेंगे।

प्रशांत किशोर ने कहा- राजनीति सिर्फ समीकरण की बात करने से नहीं होती बल्कि जनता का विश्वास जीतना जरूरी

पटना। जन सुराज पदयात्रा के सूत्रधार प्रशांत किशोर ने मौजूदा समय में बिहार में अलग-अलग पार्टियों में हो रही जातिवाद की बातें और उन पर राजनीतिक रोटी सेंक रहे नेताओं पर अपनी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा कि राजनीति सिर्फ समीकरण की बात करने से नहीं होती बल्कि जनता का विश्वास जीतना बहुत जरूरी है। प्रशांत किशोर ने आगे कहा कि अभी सरकार को बदले डेढ़ से 2 ही महीने हुए हैं और आप देख रहे होंगे कि बिहार से दिल्ली तक नेताओं में छटपटाहट होने लगी है। ऐसा इसलिए हो पा रहा क्योंकि बिहार में जमीन में लोगों को जन सुराज की ताकत दिख रही है। मुझे अगर कोई धंधेबाज कह रहा है तो मैं बस इतना ही कहना चाहूंगा कि हां मैंने इस बार बिहार के लोगों और बिहार को सुधारने के लिए काम ले लिया है। हम बिहार इस बार जनता का ठेका लेकर आए हैं ताकि जनता के लिए काम कर सकें। अभी तरकस में कई तीर बाकी है। बिहार में कई लोग कह रहे हैं कि पदयात्रा हो गई अब क्या करेंगे तो मैं उनको बतला दूं कि अभी इससे बड़ा बुलेट दागना बाकी है।

जम्मू-कश्मीर में कश्मीरी पंडितों के लिए जनता दरबार आयोजित किए जाए-भाजपा

जम्मू। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की जम्मू-कश्मीर इकाई ने सोमवार को मांग की कि उपराज्यपाल प्रशासन को विस्थापित कश्मीरी पंडित समुदाय के लोगों के लिए जनता दरबार आयोजित करना चाहिए ताकि उनकी शिकायतों और मुद्दों का समाधान किया जा सके। उपराज्यपाल प्रशासन ने जम्मू-कश्मीर के सभी 20 जिलों में 28 दिवसीय जनता दरबार का कैलेंडर जारी किया है, जिसका संचालन प्रशासनिक सचिवों सहित वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा 3 जुलाई से शुरू होगा। जम्मू-कश्मीर के सामान्य प्रशासन विभाग के आदेश के मुताबिक, ''उपायुक्त इन जनता दरबारों के आयोजन की देखरेख करेंगे और अपने-अपने जिलों में पहले से ही व्यापक प्रचार सुनिश्चित करेंगे। पूर्व विधायक और भाजपा प्रवक्ता जी एल रैना ने कहा कि उनकी मांग है कि विस्थापित कश्मीरी पंडित समुदाय के लिए शिविरों में जनता दरबार आयोजित किए जाने चाहिए, क्योंकि उन्हें किसी विशेष जिले से संबंधित न होने की दोहरी चुनौती का सामना करना पड़ता है। मौजूदा समय में 70,000 से अधिक विस्थापित कश्मीरी पंडित जम्मू जिले में 5 प्रवासी शिविरों और अन्य जगहों पर रह रहे हैं।

देशभर में सस्ता हुआ पेट्रोल-डीजल, यहां बढ़ी ईंधन की कीमत

नई दिल्ली। भारतीय तेल कंपनियों द्वारा महीने की पहली तारीख को पेट्रोल-डीजल के ताजा रेट जारी किए जाते हैं। इसी बीच आज यानी 1 जुलाई 2024 को ऑयल मार्केटिंग कंपनियों ने कमर्शियल एलपीजी गैस सिलेंडर की कीमत में करीब 30 रुपये प्रति यूनिट की कटौती की, जबकि घरेलू गैस सिलेंडर की कीमत में कोई बदलाव नहीं हुआ है। इसके अलावा, राज्य स्तर पर पेट्रोल और डीजल की कीमतों में भी बदलाव किए गए हैं।

कहां महंगा हुआ पेट्रोल और डीजल?

- बिहारः पेट्रोल की कीमत 37 पैसे बढ़कर 107.17 रुपये प्रति लीटर और डीजल 87.79 रुपये प्रति लीटर हो गया है।
- उत्तर प्रदेशः पेट्रोल 27 पैसे बढ़कर 94.70 रुपये प्रति लीटर और डीजल 31 पैसे बढ़कर 87.79 रुपये प्रति लीटर हो गया है।
- महाराष्ट्रः पेट्रोल 35 पैसे बढ़कर 104.56 रुपये प्रति लीटर और डीजल 43 पैसे बढ़कर 91.08 रुपये प्रति लीटर हो गया है।
- कोलकाताः पेट्रोल और डीजल की कीमत में 1 रुपये की बढ़ोतरी हुई है।

सैलरी पर रखे थे 30 कर्मचारी...पेपर लीक के लिए पूरी फर्म चलाता था आरोपी संजीव, सीबीआई ने किए नए खुलासे

नई दिल्ली। नीट पेपर लीक मामले में सीबीआई ने कई नए खुलासे किए हैं। पूछताछ में पता चला है कि नीट पेपर लीक के मास्टरमाइंड संजीव ने पेपर लीक कराने के लिए 30 लोगों को सैलरी पर रखा हुआ था। वहीं, कई लोगों को तो इस्तेमाल करने के लिए बाइक भी दी गई थी। बता दें कि सीबीआई ने पेपर लीक मामले में गिरफ्तार किए गए आरोपियों से पूछताछ की। जिसमें आरोपियों ने बताया कि संजीव पेपर लीक का मास्टरमाइंड था, उसने इस काम के लिए कई लोग हायर किए हुए थे। आरोपी संजीव किसी फर्म की तरह पेपर लीक का पूरा नेटवर्क चलाता था। पेपर लीक का पूरा गिरोह संजीव मुखिया के इशारों पर काम करता था। पूछताछ में पुलिस को यह भी पता चला कि आरोपी संजीव ने लड़कों को सैलरी पर रखा हुआ था। जिन्हें समय पर सैलरी दे जाती थी और सारे काम करवाए जाते थे। वहीं, कुछ लड़कों को आरोपी संजीव की तरफ से बाइक भी दी गई थी।

विपक्षी नेताओं का केंद्र सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन

नई दिल्ली। इंडिया अलायंस ने पार्लियमेंट सेशन के छठे दिन विपक्ष को चुप कराने के लिए केंद्र सरकार के खिलाफ प्रदर्शन किया है। इस दौरान विपक्ष राहुल गांधी के साथ-साथ इंडिया के कई सांसद मौजूद रहे। इस प्रदर्शन के दौरान, %विपक्ष का सम्मान करें, डराना-धमकाना बंद करें! लिखी तख्तियों के साथ नारेबाजी भी की गई। इसके अलावा आप पार्टी के कुछ सांसदों ने दिल्ली सीएम के सलाखों के पीछे खड़े होने के पोस्टर भी दिखाए। विपक्षी सांसदों में लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी, कांग्रेस सांसद शशि थरूर, केसी वेणुगोपाल, मनीष तिवारी, के सुरेश, वर्षा गायकवाड़, बेनी बेहनन, एंटो एंटनी, केरल कांग्रेस (एम) के सांसद जोस के. मणि, आप के राज्यसभा सांसद संजय सिंह, सांसद राघव चड्ढा, ञ्जरूष्ट सांसद सागरिका घोष, शिवसेना (यूबीटी) सांसद प्रियंका चतुर्वेदी और सीपीआई (एम) के जॉन ब्रिटास समेत कई सांसदों ने विरोध प्रदर्शन में हिस्सा लिया। बता दें कि विपक्षी दलों का केंद्र सरकार पर आरोप है कि विपक्ष को चुप कराने के लिए केंद्रीय एजेंसियों का दुरुपयोग किया जा रहा है। इसके चलते दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल, दिल्ली के मंत्रियों, झारखंड के पूर्व सीएम हेमंत सोरेन और टीएमसी मंत्रियों की श्वष्ठ और ष्टक्चढ्ढ की तरफ से की मामलों में गिरफ्तारी की गई है।

रोहित ने जोकोविच की तरह खिताब जीत के बाद केनिंग्सटन ओवल की पिच का स्वाद चखा

ब्रिजटाउन (एजेंसी)। भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने टी20 विश्व की खिताबी जीत के बाद यहां केंसिंग्टन ओवल मैदान की पिच का स्वाद उसी तरह से चखा, जैसा की नोवाक जोकोविच विंबलडन जीतने के बाद करते हैं।

भारतीय पुरुष क्रिकेट टीम को 11 वर्षों में पहली वैश्विक ट्रॉफी दिलाने के बाद रोहित मैदान पर जश्न बनाने के बाद चुपचाप उस पिच की ओर बढ़े जिस पर यह मुकाबला खेला गया था। उन्होंने थोड़ी सी मिट्टी उठा कर उसे अपनी जीभ पर रखा। महान टेनिस खिलाड़ी जोकोविच के प्रशंसकों के लिए यह दृश्य कोई नया नहीं था।

सर्बिया का यह खिलाड़ी विंबलडन खिताब जीतने के बाद आम तौर पर सेंटर कोर्ट से एक चुटकी घास को उखाड़ कर उसे चबाना पसंद करता है। यह ऐसा पल होता है जिसे फोटोग्राफर और वीडियाग्राफर कैमरे में कैद करना चाहते हैं। रोहित के पिच की मिट्टी चखने के वीडियो को प्रसारकों ने अपने इंस्टाग्राम पेज पर साझा किया।

इस मामले में विंबलडन का आधिकारिक इंस्टाग्राम हैंडल भी पीछे नहीं रहा। विंबलडन के आधिकारिक इंस्टाग्राम पेज पर जोकोविच और रोहित की तस्वीरों को एक लगाकर पोस्ट किया गया।

आईसीसी टी20 विश्व कप में जीतने के बाद जानिए भारत को मिली कितनी प्राईज मणी

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईसीसी ने इस वर्ष टी20 विश्व कप में रिकॉर्ड संख्या में टीमों को पुरस्कार दिए है। इस बार जो पुरस्कार राशि टीमों को मिली है वो अब तक किसी भी टी20 विश्व कप में नहीं दी गई है। इतनी अधिक राशि को दिए जाने के पीछे भी कई अच्छे कारण है। इस वर्ष रिकॉर्ड 20 टीमों ने टी20 विश्वकप में हिस्सा लिया था। इस वर्ष इतनी अधिक संख्या में टीमों के हिस्सा लेने से मैचों की संख्या में भी इजाफा हुआ। वहीं टी20 विश्व कप को लेकर दर्शकों में भी भारी उत्साह देखने को मिला। इस बार टी20 विश्व कप की समाप्ति के बाद सभी 20 टीमों को आईसीसी की ओर से पुरस्कार राशि भी दी गई है, जबकि विजेता टीम भारत और रनरअप टीम दक्षिण अफ्रीका को शानदार पुरस्कार राशि दी गई है। इस वर्ष आईसीसी ने पुरस्कार राशि अमेरिकी डॉलर में दी है। इस पुरस्कार को लेख में भारतीय मुद्रा में बताया गया है।

1. भारत- चैंपियनशिप जीतने पर 20 करोड़ 37 लाख और मैच विनिंग बोनस भी दिया गया है।

2. दक्षिण अफ्रीका- विश्व कप में दूसरे नंबर पर रहने के लिए दक्षिण अफ्रीका को 10 करोड़ 64 लाख और मैच जीतने वाले बोनस के लिए 2 करोड़ 8 लाख, भारतीय मुद्रा में दक्षिण अफ्रीका की आय लगभग 12 करोड़ 72 लाख है।

3. इंग्लैंड- सेमीफाइनल में पहुंचने के लिए 6 करोड़ 55 लाख और 1 करोड़ 17 लाख मैच विनिंग बोनस, ब्रिटिश टीम की झोली में भारतीय मुद्रा के हिसाब से करीब 7 करोड़ 72 लाख आए।

4. अफगानिस्तान- सेमीफाइनल में पहुंचने के लिए 6 करोड़ 55 लाख और 1 करोड़ 30 लाख मैच विनिंग बोनस मिलाकर भारतीय मुद्रा में अफगानिस्तान की झोली में करीब 7 करोड़ 85 लाख आए।

5. ऑस्ट्रेलिया- सुपर आठ में पहुंचने के लिए 3 करोड़ 18 लाख और मैच जीतने वाले बोनस के लिए 1 करोड़ 30 लाख, भारतीय मुद्रा में ऑस्ट्रेलिया की झोली में लगभग 4 करोड़ 48 लाख आए।

6. बांग्लादेश- सुपर आठ में प्रमोशन के लिए 3 करोड़ 18 लाख और मैच विनिंग बोनस के लिए 78 लाख, भारतीय मुद्रा में बांग्लादेश की झोली में लगभग 3 करोड़ 96 लाख आए।

7. वेस्टइंडीज- सुपर आठ में पहुंचने के लिए 3 करोड़ 18 लाख और मैच विनिंग बोनस के तौर पर 1 करोड़ 30 लाख, भारतीय करेंसी के मुताबिक वेस्टइंडीज की जेब में करीब 4 करोड़ 48 लाख रुपए हैं।

8. अमेरिका- सुपर आठ में पहुंचने के लिए 3 करोड़ 18 लाख और मैच जीतने वाले बोनस के लिए 65 लाख, भारतीय मुद्रा में अमेरिका की झोली में लगभग 3 करोड़ 83 लाख आए।

9 से 12वें नंबर पर पाकिस्तान (2 करोड़ 58 लाख), स्कॉटलैंड (2 करोड़ 71 लाख), न्यूजीलैंड (2 करोड़ 58 लाख) और श्रीलंका (2 करोड़ 45 लाख) हैं।

13 से 20वें नंबर पर हैं कनाडा (2 करोड़ 26 लाख), आयरलैंड (2 करोड़), नामीबिया (2 करोड़ 13 लाख), ओमान (1 करोड़ 87 लाख), युगांडा (2 करोड़ 13 लाख), पापुआ न्यू गिनी (1 करोड़ 87 लाख), नीदरलैंड (2 करोड़ 13 लाख) और नेपाल (2 करोड़)।

रिटायरमेंट के बाद दिनेश कार्तिक की आरसीबी में हुई वापसी

नई दिल्ली (एजेंसी)। आरसीबी ने हाल ही में रिटायर हुए विकेटकीपर बल्लेबाज दिनेश कार्तिक को टीम में नई जिम्मेदारी के साथ जोड़ा है। दरअसल, आरसीबी ने दिनेश कार्तिक को टीम का नया बल्लेबाजी कोच और मेंटॉर नियुक्त किया है। फ्रैंचाइजी ने सोशल मीडिया पर इसकी घोषणा की। कार्तिक ने जून की शुरुआत में क्रिकेट के सभी प्रारूपों को अलविदा कह दिया था। इस दौरान उन्होंने अपने रिटायरमेंट के दौरान कहा था कि, आगने आने वाली नई चुनौतियों पर वो अपना ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं। आरसीबी ने एक्स पर कार्तिक का एक वीडियो पोस्ट करते हुए लिखा कि, हर मायने में हमारे विकेटकीपर, दिनेश कार्तिक का आरसीबी में बिल्कुल नए अवतार में स्वागत है। डीके आरसीबी पुरुष टीम के बल्लेबाजी कोच और मेंटॉर होंगे। वहीं अपनी 39वें जन्मदिन पर संन्यास लेने वाले दिनेश कार्तिक ने कहा कि, पेशेवर स्तर पर कोचिंग करना मेरे लिए बेहद रोमांचक है और ये मेरे जीवन के नए अध्याय के रूप में मेरे लिए वाकई जुनूनी है। उम्मीद है कि एक खिलाड़ी के रूप में मेरे अनुभवों की व्यापकता समूह के विकास में योगदान दे सकेगी और अतिरिक्त मूल्य ला सकेगी।

खेल मंत्री को उम्मीद, भारत पेरिस ओलंपिक में पदक तालिका में सुधार करेगा

नयी दिल्ली (एजेंसी)। खेल मंत्री मनसुख मांडविया ने आगामी पेरिस ओलंपिक में भारतीय दल द्वारा नया मानदंड स्थापित करने की उम्मीद जताते हुए इस बात पर जोर दिया कि हाल के वर्षों में सरकार के लिए खेल प्राथमिकता रहे हैं। मांडविया ने पेरिस जाने वाले एथलीटों की औपचारिक विदाई और किट के अनावरण के दौरान कहा, ''मुझे विश्वास है कि यह दल खेलों में भारत के विकास को बनाए रखेगा।'' मांडविया ने कहा, '' हमने 2016 रियो में दो पदकों से बढ़कर तोक्यो में सात पदक हासिल किए। नीरज चोपड़ा के स्वर्ण पदक से भारत तालिका में 67वें से 48वें (स्थान) पर पहुंच गया। मुझे उम्मीद है कि हमारे एथलीट हमें इस बार पदक तालिका में और भी ऊपर ले जाएंगे।'' इस विदाई समारोह में एथलीटों, भारतीय ओलंपिक संघ की अध्यक्ष पीटी उषा और पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में खेलों से पहले एथलीटों के समर्थन में सरकार की टारगेट ओलंपिक पोडियम योजना (टॉप्स) के बारे में बताया गया। उन्होंने कहा, '' सरकार ने टॉप्स जैसी विभिन्न योजनाओं के माध्यम से एथलीटों का समर्थन किया है, जो उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वालों को विशेष सहायता प्रदान करती है।'' पेरिस जाने वाले भारतीय दल की तीन किट (औपचारिक पोशाक, खेल पोशाक, और यात्रा पोशाक) का अनावरण किया गया। उन्होंने कहा, '' यह कार्यक्रम सिर्फ किट और औपचारिक पोशाक के अनावरण के बारे में नहीं है।

बल्कि उन अरबों भारतीयों के सपनों और आकांक्षाओं का प्रतीक है जो एथलीटों के पीछे एकजुट हैं।''

बारबाडोस में भारतीय टीम मुश्किल में फंसी, खिलाड़ियों को होना पड़ा होटल रुम में बंद

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम ने आईसीसी टी20 वर्ल्ड कप का खिताब जीतकर 17 साल का सूखा खत्म किया है। रोहित शर्मा की कप्तानी में टीम इंडिया ने साउथ अफ्रीका को हराकर ये ट्रॉफी अपने नाम की है। भारतीय फैंस को अपनी इस चैंपियन टीम का इंतजार है लेकिन भारत लौटने में उनको देरी हो रही है। बारबाडोस जहां टी20 वर्ल्ड कप फाइनल खेला गया वहां मौसम खराब होने के कारण भारतीय टीम बुरी तरह फंस गई है। हालात बेहद खराब हैं सारे खिलाड़ी होटल के कमरे में बंद होने को मजबूर हो गए हैं। भारतीय क्रिकेट टीम आईसीसी टी20 वर्ल्ड कप जीतने के बाद जल्दी से जल्दी स्वदेश लौटना चाहती है लेकिन बारबाडोस के मौसम ने उनको रोक दिया है। मौसम विभाग ने बारबाडोस में चक्रवाती तूफान की आशंका जताते हुए इसको लेकर हाई-अलर्ट जारी किया है। इसकी वजह से वहां की सारे एयरपोर्ट्स को फिलहाल बंद कर दिया गया है। बारबाडोस से जारी उड़ाने रद्द कर दी गई हैं। स्थानीय लोगों को भी घर से निकलने को मना किया गया है। तूफान की वजह से पूरे इलाके में कर्फ्यू जैसे हालात हैं। बारबाडोस के मौसम के कारण भारतीय टीम को होटल के कमरों में बंद रहना पड़ रहा है। बाहर निकलने को लेकर सख्त चेतावनी जारी की जा चुकी है। तूफान की आशंका को देखते हुए टीम इंडिया के सभी खिलाड़ी होटल के कमरे में बंद हैं। पीटीआई की रिपोर्ट की माने तो इस वक्त होटल में 70 सदस्यों के होने की जानकारी है। जैसे ही मौसम में बदलाव होता है सभी सदस्यों को चार्टरन फ्लाइट के जरिए बारबाडोस से निकालकर ब्रिजटाउन पहुंचाया जाएगा। जहां से भारतीय दल नई दिल्ली के लिए उड़ान भरेगा।

बीसीसीआई ने दिया हेड कोच को लेकर बड़ा अपडेट

नई दिल्ली(एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम ने आईसीसी टी20 वर्ल्ड कप जीतकर अपने मुख्य कोच राहुल द्रविड़ को यादगार विदाई दी। इसके बाद अब टीम इंडिया के हेड कोच के नाम सवाल उठने लगे हैं। इसको लेकर फैसला किया जाना बाकी है, इस बीच बीसीसीआई सचिव जय शाह ने बताया कि श्रीलंका में टीम इंडिया नए कोच के साथ खेलने उतरेगी। भारतीय क्रिकेट टीम के नए कोच पर फैसला जुलाई के अंत तक कर लिया जाएगा। जय शाह ने पीटीआई से बताया कि बीसीसीआई की क्रिकेट एडवाइजरी कमेटी ने भारत के नए कोच के लिए इंटरव्यू किया था। इस कमेटी द्वारा दो उम्मीदवार को मुख्य कोच की जिम्मेदारी के लिए शॉर्टलिस्ट किया गया है जिसमें से एक नाम जल्दी फाइनल किया जाएगा। उन्होंने कहा कि भारतीय टीम को उनका नया हेड कोच श्रीलंका सीरीज से पहले मिल जाएगा। फिलहाल, भारतीय टीम 27 जुलाई से तीन टी20 और तीन वनडे खेलने श्रीलंका जायेगी। भारत के 11 साल बाद आईसीसी खिताब जीतने पर खुशी जताते हुए शाह ने रोहित शर्मा और विराट कोहली की तारीफ की। विराट कोहली, रोहित शर्मा और रविंद्र जडेजा ने टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट को अलविदा कह दिया है। साथ ही जय शाह ने कहा, ''पिछले साल भी यही कप्तान था और यहां भी। हमने पिछले साल भी फाइनल को छोड़कर सारे मैच जीते। इस बार और मेहनत करके खिताब जीता। दूसरी टीमों से तुलना करें तो अनुभव मायने रखता है। रोहित से लेकर विराट तक , सभी ने शानदार प्रदर्शन किया। अनुभव से काफी फर्क पड़ा।'' बीसीसीआई सचिव ने आगे कहा कि, एक अच्छे खिलाड़ी को पता होता है कि कब विदा लेनी है। हमने कल देखा। रोहित का स्ट्राइक रेट कई युवा खिलाड़ियों से अच्छा है। साथ ही यह पूछने पर कि इन तीनों के संन्यास लेने के बाद क्या वह बदलाव का दौर देख रहे हैं? इसका जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि, बदलाव तो हो गया जब तीन दिग्गजों ने विदा ले ली। हार्दिक पंड्या के हरफनमौला प्रदर्शन और रोहित के बाद उनके कप्तान बनने की संभावना पर शाह ने कहा कि, कप्तानी का फैसला चयनकर्ता करेंगे। हम उनसे बात करके इसका ऐलान करेंगे। हार्दिक के फॉर्म पर काफी सवाल उठ रहे थे लेकिन हमने और चयनकर्ताओं ने उस पर भरोसा किया जिस पर वह खरा उतरा। शाह ने यह भी बताया कि इस साल के आखिर में भारत ए टीम आस्ट्रेलिया का दौरा करेगी।

हार्दिक पंड्या को पत्नी नताशा ने नहीं दी वर्ल्ड कप जीतने की बधाई

नई दिल्ली (एजेंसी)। टी20 वर्ल्ड कप का खिताब जीतकर भारतीय क्रिकेट टीम ने 17 साल का सूखा खत्म किया है। इस बड़ी जीत में हार्दिक पंड्या का बेहद अहम रोल रहा है। लेकिन इस बीच हार्दिक पंड्या और उनकी पत्नी के रिश्ते को लेकर एक बार भी चर्चा शुरू हो गई है। दरअसल, नताशा स्टेनकोविक ने टी20 वर्ल्ड कप 2024 की जीत पर कुछ भी शेयर नहीं किया है। जिसके बाद इस कपल के डिवोर्स की अफवाहों ने फिर से तूल पकड़ लिया है। ऐतिहासिक टी20 वर्ल्ड कप जीतने के बाद हार्दिक अपने इमोशन पर कंट्रोल नहीं कर पाए और रो पड़े। उन्हें वीडियो कॉल पर बात करते हुए भी देखा गया था, लेकिन फैंस ने अनुमान लगाया कि वह कॉल नताशा स्टेनकोविकट के साथ नहीं था। वहीं भारत की जीत पर नताशा ने भी किसी तरह का कोई पोस्ट शेयर नहीं किया। हालांकि, इससे पहले नताशा हमेशा हार्दिक की जीत पर पोस्ट शेयर करती थीं, फिर चाहे वो आईपीएल हो या अन्य मैच लेकिन इस बार इतनी बड़ी उपलब्धि पर उन्होंने अपने सोशल मीडिया पर कुछ भी शेयर नहीं किया है। ऐसे में फैंस अंदाजा लगा रहे हैं कि दोनों के रिश्ते में दरार आ गई है। बता दें कि, आईपीएल 2024 के दौरान से हार्दिक पंड्या और नताशा लगातार अपने रिश्ते के कारण चर्चाओं में रहे। एक समय ऐसा भी था, जब नताशा ने अपनी शादी की तस्वीरें अपने इंस्टाग्राम से हटा दी थीं, लेकिन कुछ समय बाद उन्होंने वहीं तस्वीरें अपलोड कर दीं। वहीं आईपीएल 2024 में हार्दिक पांड्या को कई बार ट्रोल और हूटिंग से गुजरना पड़ा उस समय भी नताशा हार्दिक को चीयर करने के लिए स्टेडियम नहीं आई।

तीसरा ओलंपिक पदक जीतने के लिए कौशल को निखारने पर पी वी सिंधू का फोकस

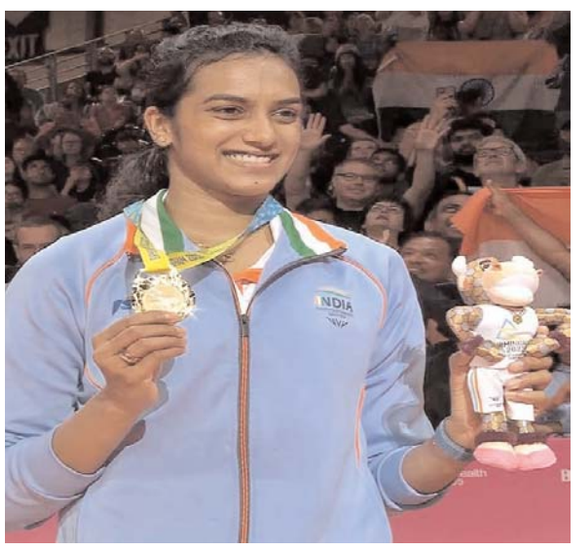

नयी दिल्ली (एजेंसी)। दो बार की ओलंपिक पदक विजेता पी वी सिंधू शारीरिक और मानसिक रूप से अच्छी स्थिति में हैं लेकिन उन्हें महसूस होता है कि ओलंपिक में तीसरा पदक जीतने के लिए उन्हें और अधिक 'चतुर ' होने की जरूरत है। रियो और तोक्यो में पिछले दो ओलंपिक में क्रमश- रजत और कांस्य पदक जीतने वाली सिंधू का लक्ष्य तीन ओलंपिक पदक जीतने वाली पहली भारतीय बनने का है। सिंधू ने भारतीय खेल प्राधिकरण (साइ), भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) और भारतीय बैडमिंटन संघ (बीएआई) द्वारा आयोजित बातचीत के दौरान कहा, ''यह चुनौतीपूर्ण है। यह आसान नहीं है, पर असंभव भी नहीं है।'' उन्होंने कहा, ''तीसरे ओलंपिक में जाने से पहले मुझे और अधिक स्मार्ट होने की जरूरत है।

मुझे अनुभव है, पर स्मार्ट होने की जरूरत है। मुझे उम्मीद है कि मैं पदक का रंग बदल सकती हूं और निश्चित रूप से देश के लिए एक और पदक जीत सकती हूं। '' वह अभी जर्मनी के सारब्रुकेन में हरमन-न्यूबर्गर स्पोर्ट्स्क्यूल में ट्रेनिंग कर रही हैं। वह 26 जुलाई को ओलंपिक शुरू होने से पहले सीधे पेरिस जायेंगी। सिंधू ने कहा, ''शारीरिक और मानसिक रूप से मैं फिट हूं, बस मुझे स्मार्ट होना है और मेरे कोच अगुस (द्वी सैंटोसो) इसका ध्यान रख रहे हैं। मेरे ट्रेनर भी ध्यान रख रहे हैं। मैं सभी स्ट्रोक्स पर काम कर रही हूं, चाहे वो डिफेंस हो, या अटैक या नेटप्ले। सभी चीजों में परफेक्ट होना महत्वपूर्ण है। '' उन्होंने कहा, '' मैं सिर्फ एक स्ट्रोक या तकनीक पर फोकस नहीं कर रही हूं।

आप नहीं जानते कि क्या होने वाला है। ऐसे खिलाड़ी हैं जो काफी समझदार हैं और रणनीति में बदलाव करके प्लान बी पर आ जाते हैं। आपको इसके लिए तैयार रहने की जरूरत है। मेरा फोकस अभ्यास करने पर है।

रिकॉर्ड 5.3 करोड़ दर्शकों ने भारत-दक्षिण अफ्रीका टी-20 विश्व कप फाइनल मैच देखा

नयी दिल्ली (एजेंसी)। टी20 विश्व कप फाइनल मैच को ओटीटी स्ट्रीमिंग मंच पर 5.3 करोड़ लोगों ने देखा। हालांकि यह आंकड़ा पिछले साल नवंबर में हुए एकदिवसीय विश्वकप फाइनल मैच के रिकॉर्ड दर्शकों से कम रहा। शनिवार रात हुए टी-20 विश्वकप फाइनल मैच को जीतकर भारत ने आईसीसी ट्रॉफी उठाने के 13 साल के इंतजार को समाप्त किया। भारत-दक्षिण अफ्रीका आईसीसी पुरुष टी-20 क्रिकेट विश्व कप फाइनल मैच को शनिवार को डिज्नी+हॉटस्टार ओटीटी मंच पर लगभग 5.3 करोड़ दर्शकों ने देखा। पिछले साल 20 नवंबर को भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच 50 ओवरों के प्रारूप के फाइनल मैच को देखने वालों की अधिकतम संख्या 5.9 करोड़ थी। हालांकि मेजबान देश भारत हार गया था। उद्योग विशेषज्ञों के अनुसार, यह 5.9 करोड़ अभी भी किसी भी क्रिकेट मैच की लाइव स्ट्रीमिंग के लिए सर्वोच्च दर्शक संख्या का रिकॉर्ड है। टी-20 क्रिकेट विश्व कप में भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच 24 जून को खेले गए नॉकआउट मैच में अधिकतम दर्शक संख्या 3.9 करोड़ रही थी। डिज्नी स्टार के पास 'लीनियर' और डिजिटल दोनों प्लेटफार्मों के लिए विशेष प्रसारण और मीडिया अधिकार हैं।

दक्षिण अफ्रीका के प्रशंसकों ने भारत के साथ अपनी टीम की भी सराहना की

जोहानिसबर्ग (एजेंसी)। दक्षिण अफ्रीका करीबी अंतर से टी20 विश्व कप खिताब जीतने से चूक गया लेकिन उसके प्रशंसकों ने पहली बार किसी विश्व कप के फाइनल में पहुंचने पर टीम को बधाई देने के साथ चैम्पियन भारतीय टीम की भी सराहना की। दक्षिण अफ्रीका के इकलौते राष्ट्रीय भारतीय रेडियो स्टेशन, लोटस एफएम पर पूर्व खेल प्रस्तोता, विमला फ्रैंक ने कहा, ''हमने प्रोटियाज के फाइनल में पहुंचने के लिए बहुत लंबे समय तक इंतजार किया और हम सभी वास्तव में उम्मीद कर रहे थे कि वे खिताब लेकर आएंगे।'' उन्होंने कहा, ''लेकिन ऐसा नहीं हुआ इसका मतलब यह नहीं है कि हम इस अभियान का इसका हिस्सा नहीं हैं। फाइनल में पहुंचकर इन खिलाड़ियों ने दक्षिण अफ्रीका क्रिकेट के लिए जो किया वह बहुत मायने रखता है। हमें उन पर गर्व है।'' उन्होंने कहा, '' मैं भारतीय मूल की हूं लेकिन पूरी तरह से दक्षिण अफ्रीका की समर्थक हूं। मैं भारतीय टीम की सफलता से खुश हूं।'' क्रिकेट दक्षिण अफ्रीका (सीएसए) के मुख्य कार्यकारी अधिकारी फोलेत्सी मोसेकी ने फ्रैंक की भावनाओं को दोहराया। मोसेकी ने कहा, ''पूरा दक्षिण अफ्रीका इस टीम के साथ खड़ा है। टी20 विश्व कप के फाइनल में पहुंचना अपने आप में एक जबरदस्त उपलब्धि है और इसका जश्न मनाया जाना चाहिए।'' यहां ऐतिहासिक वांडरर्स स्टेडियम में बड़ी स्क्रीन पर मैच देखने के लिए दोस्तों के साथ पहुंचे बोंगानी बुथेलेली ने कहा, ''घर पर टीवी के बजाय बड़ी भीड़ के साथ बड़े पर्दे पर इस उत्साह देखना अधिक मजेदार था।

'डी' ग्रेड में रहे विभाग, तो विभाग प्रमुख का कटेगा एक हफ्ते का वेतन

राजस्व में सुधार नहीं आने पर सभी एसडीएम और तहसीलदारों को नोटिस

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। कलेक्टर अनुराग वर्मा ने समय-सीमा प्रकरणों की सोमवार को संपन्न बैठक में सीएम हेल्पलाइन के प्रकरणों के निराकरण में अपेक्षित सुधार नहीं आने पर सभी एसडीएम और तहसीलदारों को कारण बताओं नोटिस जारी करने के निर्देश दिये। उन्होंने राजस्व विभाग के लंबित सीएम हेल्पलाइन के प्रकरणों के निराकरण में कोई सुधार नहीं होने पर एसडीएम मझगवां और रामपुर बघेलान तथा इनके सभी तहसीलदारों की दो-दो दिन की वेतन काटने के निर्देश भी दिये। समय-सीमा प्रकरणों की बैठक में सीईओ जिला पंचायत संजना जैन, अपर कलेक्टर स्वप्निल वानखड़े, आयुक्त नगर निगम शेर सिंह मीना, एसडीएम नीरज खरे, आरएन खरे, जितेंद्र वर्मा, राहुल सिलाढ़िया, सुधीर बैक, एपी द्विवेदी, सभी जनपद सीईओ, नगरीय निकायों के सीएमओ सहित विभाग प्रमुख अधिकारी उपस्थित थे।

सीएम हेल्पलाइन की समीक्षा करते हुये कलेक्टर ने कहा कि पिछली टीएल बैठक में चेतावनी और निर्देशित करने के बाद भी सीएम हेल्पलाइन की स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ है। जिले में कुल 15995 शिकायतें अभी भी लंबित हैं। राजस्व विभाग की शिकायतों के निराकरण में कोई सुधार नहीं दिख रहा है। रामपुर बघेलान में सबसे ज्यादा राजस्व की लगभग 1100 शिकायतें अरुचि और अनदेखी के कारण लंबित हैं। इसी प्रकार मझगवां अनुविभाग में 900 से अधिक शिकायतें लंबित हैं। कलेक्टर ने कहा कि सभी एसडीएम, तहसीलदारों को एक बार पुन: नोटिस जारी करें और इसका उल्लेख सीआर में भी किया जायेगा।

सीएम हेल्पलाइन की विभागवार समीक्षा करने पर स्वास्थ्य विभाग, जल संसाधन, ग्रामीण विकास, श्रम, सामाजिक न्याय, महिला बाल विकास, कृषि, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी, ऊर्जा, सामान्य प्रशासन, सहकारिता, नागरिक आपूर्ति निगम, आदिम जाति कल्याण, पिछड़ा वर्ग कल्याण विभागों में अपेक्षित निराकरण नहीं पाया गया। कलेक्टर ने इन विभागों के अधिकारियों से अप्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि जुलाई माह की 20 तारीख को होने वाली मासिक ग्रेडिंग में कोई भी विभाग 'डी' ग्रेड में नहीं रहना चाहिये। अन्यथा विभाग प्रमुख अधिकारी का एक हफ्ते का वेतन काटा जायेगा। कलेक्टर ने नागरिक आपूर्ति निगम के जिला प्रबंधक से कहा कि सीएम हेल्पलाइन में भुगतान संबंधी शिकायतें लंबित नहीं रहनी चाहिये। पेमेंट की सभी शिकायतें शीघ्रतापूर्वक क्लियर करें। बैठक में जल संसाधन विभाग से किसी अधिकारी के उपस्थित नहीं रहने पर कार्यपालन यंत्री को निलंबित करने का नोटिस जारी कर उसकी प्रति मुख्य अभियंता को भी भेजने के निर्देश दिये गये।

ग्रामीण विकास और पंचायत की सीएम हेल्पलाइन शिकायतों की जनपद पंचायत वार समीक्षा करते हुए कलेक्टर ने कोई सुधार नहीं आने पर सभी जनपद के सीईओ को कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिये। नगर परिषदों की सीएम हेल्पलाइन की समीक्षा में शिकायत की बढ़ी हुई संख्या वाले सीएमओ को नोटिस जारी करने के निर्देश दिये गये।

कलेक्टर ने 50 दिवस से ऊपर की शिकायतों की समीक्षा में कहा कि पिछले माह की अकेले 6455 शिकायत है लंबित हैं। इन्हें 2 हजार की संख्या तक लायें। किसान सम्मान निधि में केवाईसी की प्रगति की समीक्षा में कलेक्टर ने कहा कि सभी किसानों की केवाईसी शीघ्र पूर्ण करें। जिनका नहीं हो सकता है उनके नाम स्पष्ट कारण दर्शाते हुये हटायें।

जल निगम के कार्यों की समीक्षा में कलेक्टर ने डैमेज आकलन के संयुक्त सर्वे की रिपोर्ट और उसके बाद की गई कार्यवाही की जानकारी ली। कलेक्टर ने कहा कि विभागों से समन्वय कर क्षतिग्रस्त पाइपलाइन की रिपेयरिंग करायें। बरसात के समय ध्यान दें कि बसाहटों और गांवों में खुदाई का काम नहीं करें। गांव की बसाहट के बाहर पाइपलाइन बिछाने का कार्य सुरक्षित रूप से करें। बारिश के मौसम में खुदाई के रेस्टोरेशन का काम शीघ्र पूर्ण करायें, ताकि बरसात में जल भराव, कीचड़ और आवागमन अवरुद्ध नहीं हो।

नर्सिंग कॉलेज घोटाले पर कांग्रेस का प्रदर्शन

मंत्री विश्वास सारंग की बर्खास्तगी और अफसरों के निलंबन की मांग

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। प्रदेश में हुए नर्सिंग कालेज घोटाले पर कांग्रेस प्रदेश व्यापी आह्वान पर सतना में भी सड़क पर उतरी। कांग्रेसियों ने यहां प्रदर्शन किया और दोषी अफसरों के निलंबन तथा चिकित्सा शिक्षा मंत्री रहे विश्वास सारंग को बर्खास्त करने की मांग की।

नर्सिंग कॉलेज घोटाले के मामले में सोमवार को सतना में प्रदर्शन किया। कांग्रेसी रैली की शक्ल में कलेक्ट्रेट पहुंचे और उन्होंने राज्यपाल के नाम संबोधित ज्ञापन एसडीएम सिटी नीरज खरे को सौंपा। जिलाध्यक्ष दिलीप मिश्रा और शहर अध्यक्ष एडवोकेट मकसूद अहमद के नेतृत्व में पहुंचे कांग्रेसियों ने जमकर नारेबाजी की और प्रदेश की भाजपा सरकार को घेरते हुए छात्रों के भविष्य के साथ खेलवाड़ करने का आरोप लगाया।

राज्यपाल के नाम संबोधित ज्ञापन में कांग्रेसियों ने कहा कि नर्सिंग कॉलेज घोटाला सरकार और उसके अफसरों की मिलीभगत का नतीजा है। विश्वास सारंग के चिकित्सा शिक्षा मंत्री रहते हुए इस घोटाले में मंत्री के साथ साथ एसीएम मोहम्मद सुलेमान तथा तब के चिकित्सा शिक्षा आयुक्त निशांत बरबड़े की भी भूमिका है। हैरानी की बात है कि इसके बावजूद सारंग को मंत्री बना रखा गया है।

कांग्रेसियों ने कहा कि इस पूरे मामले की निष्पक्षता से जांच कराई जाए और विश्वास सारंग को मंत्री पद से बर्खास्त कर अफसरों के खिलाफनिलंबन की कार्रवाई की जाए। प्रदर्शनकारियों में रामशंकर पयासी, उर्मिला त्रिपाठी, डॉ रश्मि सिंह पटेल, पीयूष पटनहा, प्रदीप समदरिया, संतोष पांडेय, पार्षद रावेंद्र सिंह मिथलेश, अमित अवस्थी सन्नू, अशरफ अली बाबा, सतेंद्र निगम आदि शामिल रहे।

नगरीय निकायों की फोटोयुक्त मतदाता सूची तैयार कराने रजिस्ट्रीकरण अधिकारी नियुक्त

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। मध्यप्रदेश राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा नगरीय निकायों की फोटो युक्त मतदाता सूची के वार्षिक पुनरीक्षण-2024 का कार्यक्र म जारी कर दिया गया है। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी अनुराग वर्मा ने आयोग के निर्देशानुसार सतना जिला अंतर्गत नगरीय निकायों की फोटोयुक्त मतदाता सूची तैयार कराने राजस्व अधिकारियों को रजिस्ट्रीकरण और सहायक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी नियुक्त किये हैं।

जारी आदेशानुसार नगर पालिक निगम सतना की मतदाता सूची पुनरीक्षण के लिये अनुविभागीय अधिकारी रघुराजनगर नीरज खरे को रजिस्ट्रीकरण एवं तहसीलदार सौरभ मिश्रा को सहायक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी नियुक्त किया गया है। इसी प्रकार नगर परिषद नागौद अंतर्गत प्रभारी तहसीलदार सौरभ मिश्रा को रजिस्ट्रीकरण और नायब तहसीलदार यादवेंद्रमणि त्रिपाठी को सहायक रजिस्ट्रीकरण, नगर परिषद उचेहरा अंतर्गत प्रभारी तहसीलदार मीनाक्षी जायसवाल को रजिस्ट्रीकरण और नायब तहसीलदार ज्योति पटेल को सहायक रजिस्ट्रीकरण, नगर परिषद रामपुर बघेलान अंतर्गत प्रभारी तहसीलदार रायसिंह कुशराम को रजिस्ट्रीकरण और प्रभारी नायब तहसीलदार बीरेंद्र कुमार सिंह को सहायक रजिस्ट्रीकरण, नगर परिषद कोटर अंतर्गत प्रभारी तहसीलदार सुजीत कुमार नागेश को रजिस्ट्रीकरण और सीईओ जनपद प्रदीप दुबे को सहायक रजिस्ट्रीकरण, बिरसिंहपुर अंतर्गत प्रभारी तहसीलदार परमसुख बंसल को रजिस्ट्रीकरण और प्रभारी नायब तहसीलदार परमानंद तिवारी को सहायक रजिस्ट्रीकरण, कोठी अंतर्गत प्रभारी तहसीलदार कमलेश सिंह भदौरिया को रजिस्ट्रीकरण और नायब तहसीलदार सौरभ द्विवेदी को सहायक रजिस्ट्रीकरण, चित्रकूट अंतर्गत तहसीलदार जीतेंद्र तिवारी को रजिस्ट्रीकरण और नायब तहसीलदार को हिमांशु शुक्ला को सहायक रजिस्ट्रीकरण तथा नगर परिषद जैतवारा अंतर्गत प्रभारी नायब तहसीलदार को परमानंद तिवारी को रजिस्ट्रीकरण और प्रभारी नायब तहसीलदार को राजेश सिंह को सहायक रजिस्ट्रीकरण नियुक्त किया गया है।

कलेक्टर मैहर और एसपी ने दी नवीन कानूनों की जानकारी

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। भारतीय न्याय संहिता, नागरिक सुरक्षा संहिता 2023, भारतीय साक्ष्य अधिनियम 2023 में किए गए संशोधन एवं नवीन कानून के संबंध में कलेक्टर मैहर रानी बाटड और पुलिस अधीक्षक सुधीर अग्रवाल की उपस्थिति में कलेक्ट्रेट सभागार मैहर में जिले के सक्रिय एनजीओ के साथ बैठक संपन्न हुई। बैठक में कलेक्टर ने कहा कि भारतीय दंड संहिता को भारतीय न्याय संहिता में बदला गया है। अब न्याय संहिता पीड़ित केंद्रित हो गई है। अब जनता को जल्द न्याय मिलेगा। न्याय जल्द मिले इसके लिए समय सीमा निर्धारित कर दी गई है। अब पीड़ित स्वयं अपनी तरफसे वकील भी ले जा सकता है। किसी भी केस में पीड़ित को सुनना अब बहुत जरूरी है। बिना सुने किसी भी केस की वापसी नहीं होगी। कलेक्टर ने कहा कि नवीन धाराओं में जुर्माने के साथ-साथ सजा की अवधि भी बढ़ाई गई है। कई नई धारा जोड़ी गई है और कुछ हटाई गई है। आतंकवादी कृत्य को भी इसमें शामिल किया गया है। राजद्रोह को अब देशद्रोह के रूप में बदल दिया गया है। अब न्याय समय के साथ शीघ्र मिलेगा।

पुलिस अधीक्षक सुधीर अग्रवाल ने कहा कि देशभर में आज (1 जुलाई) से भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की जगह भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस), क्रिमिनल प्रोसीजर कोड की जगह भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (बीएनएसएस) और एविडेंस एक्ट की जगह भारतीय साक्ष्य अधिनियम (बीएसए) लागू हो चुका है। इन तीनों कानूनों का उद्देश्य विभिन्न अपराधों और उनकी सजाओं को परिभाषित कर देश में आपराधिक न्याय प्रणाली को पूरी तरह से बदलना है। नए कानून लागू होने से भारत की न्याय प्रणाली आईपीसी के तहत अंग्रेजों द्वारा बनाए गए औपनिवेशिक कानूनों से मुक्त हो चुकी है। उन्होने कहा कि नए बदलावों के तहत जीरो एफआईआर को कानूनी तौर पर अनिवार्य कर दिया है। फरियादी को एफआईआर, बयान से जुड़े दस्तावेज भी दिए जाने का प्रावधान किया गया है। फरियादी चाहे तो पुलिस द्वारा आरोपी से हुई पूछताछ के बिंदु भी ले सकता है। यानी वे पेनड्राइव में अपने बयान की कॉपी ले सकेंगे। ई-एफआईआर के मामले में फरियादी को तीन दिन के भीतर थाने पहुंचकर एफआईआर की कॉपी पर साइन करने होंगे। इस प्रकार नए कानूनों में आमजन को बहुत सारे लाभ प्रदान किए गए हैं।

इलेक्ट्रॉनिक आइटम के गोदाम में लगी आग

40 टैंकर पानी की मदद से पाया काबू, बिल्डिंग के ऊपरी माले में मालिक का घर

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। शहर के भरहुत नगर स्थित इलेक्ट्रॉनिक्स गोदाम में सोमवार सुबह आग लग गई। आग से करोड़ों रुपए का सामान जलने का अनुमान है। कोलगवां थाना अंतर्गत रिहायशी कॉलोनी भरहुत नगर में भीष्म सचदेवा की एक बिल्डिंग है। ऊपर सचदेवा रहते हैं, जबकि नीचे उन्होंने इलेक्ट्रिक और इलेक्ट्रॉनिक्स आइटमों का गोदाम बना रखा है। सुबह करीब साढ़े 9 बजे सचदेवा ने ही गोदाम से धुआं निकलते देखकर पुलिस और फायर ब्रिगेड को सूचना दी। जब तक दमकल मौके पर पहुंचती आग ने विकराल रूप धारण कर लिया।

आग की पलटें गोदाम के साथ ही ऊपरी माले तक पहुंचने लगीं। हल्की बारिश के बाद भी आग बढ़ती चली गई। मौके पर पहुंची दमकल की टीम ने करीब 40 टैंकर पानी की मदद से आग पर काबू पाया।

बताया जा रहा है कि सचदेवा के पास कई कंपनियों की डीलरशिप है। वे बिजली उपकरणों के अलावा टीवी, फ्रीज, एसी जैसे उपकरणों का भी कारोबार करते हैं। उनका माल इसी गोदाम में रहता है।

बिजली की तारों- पाइप और स्विच बोर्ड, पंखे आदि समेत इन तमाम आइटमों का गोदाम में भारी स्टॉक था। आशंका जताई जा रही है कि गोदाम में यह आग शार्ट सर्किट की वजह से लगी। पुलिस और नगर निगम की फायर सेफ्टी टीम ने जांच शुरू कर दी है।

असंगठित एवं प्रवासी श्रमिकों को जारी किये जायेंगे राशन कार्ड

ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में श्रमिकों के घर-घर जाकर किया जायेगा सर्वे

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। कलेक्टर अनुराग वर्मा ने राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम 2013 के तहत पात्र 27 प्राथमिकता परिवार की श्रेणियों में आने वाले असंगठित प्रवासी श्रमिकों को राशन कार्ड पात्रता पर्ची जारी करने तथा ई-श्रमिक पोर्टल पर जिले के शेष पंजीकृत श्रमिकों को एनएफएसए अंतर्गत पात्रता अनुसार लाभान्वित करने के लिये ग्रामीण क्षेत्र एवं नगरीय क्षेत्र के लिए समिति का गठन किया है। जिससे पात्रता वाले श्रमिक दूसरे स्थान पर वन नेशन-वन राशन कार्ड के आधार पर कार्यस्थल की दुकानों से खाद्यान्न ले सकेंगे।

कलेक्टर द्वारा जारी आदेशानुसार ग्रामीण क्षेत्र मे प्रत्येक ग्राम पंचायत के लिये गठित समिति में महिला एवं बाल विकास के सुपरवाईजर को क्लस्टर लेवल अधिकारी एवं पटवारी को संबंधित पंचायत का नोडल अधिकारी बनाया गया है। जबकि संबंधित पंचायत की शासकीय उचित मूल्य दुकान के सेल्समैन को सहायक नोडल बनाया गया है तथा ग्राम पंचायत स्तर पर सर्वे दल में ग्राम पंचायत मोबलाईजर, ग्राम पंचायत में सभी आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और कोटवार को शामिल किया गया है।

इसी प्रकार नगरीय क्षेत्र मे प्रत्येक वार्ड के लिये गठित समिति का क्लस्टर नोडल अधिकारी महिला एवं बाल विकास के सुपरवाईजर को बनाया गया है। जबकि वार्ड की शासकीय उचित मूल्य दकान के विक्रेता को सहायक नोडल अधिकारी बनाया गया है तथा वार्ड स्तर के सर्वे दल में वार्ड की सभी आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और आशा कार्यकर्ता को शामिल किया गया है।

ग्राम पंचायत एवं नगरीय क्षेत्रों में सर्वे दल के सदस्य पंजीकृत श्रमिकों के घर-घर जाकर सर्वे करेंगे। प्रतिदिन के सर्वे की जानकारी कलस्टर लेवल अधिकारी एवं सहायक नोडल अधिकारी को उपलब्ध करायेंगे। सर्वे दल के सदस्य सर्वे के दौरान पात्र या अपात्र पाये गये श्रमिकों की सूची तैयार कर संबंधित मुख्य कार्यपालन अधिकारी, मुख्य नगर पालिका अधिकारी एवं सीईओ जनपद पंचायत को प्रस्तुत करेंगे। पात्र पाये गये श्रमिकों को राशन मित्र पोर्टल पर स्वीकृत करने की कार्यवाही स्थानीय निकाय के अधिकारी/कर्मचारी द्वारा की जायेगी।

पात्रता पर्ची स्वीकृत किये गये परिवारों को उचित मूल्य की दुकानों से मैपिंग करने का कार्य सहायक/कनिष्ठ आपूर्ति अधिकारी द्वारा किया जायेगा। कलेक्टर ने सर्वे, पात्रता पर्ची सेक्शन और मैपिंग की संपूर्ण कार्यवाही पूर्ण कराये जाने के लिये जिला श्रम अधिकारी को नोडल अधिकारी नियुक्त किया है। कलेक्टर ने निर्देश दिये हैं कि ऐसे श्रमिक जो पूर्व से राशन प्राप्त कर रहे हैं, उनकी ई-केवाईसी अनिवार्य रुप से की जाये।

राष्ट्रगीत और राष्ट्रगान से हुई कार्यालयीन कामकाज की शुरुआत

सतना निप्र। जुलाई माह के प्रथम शासकीय कार्य दिवस पर सोमवार को कलेक्ट्रेट सभागार सतना में कलेक्टर अनुराग वर्मा की उपस्थिति में राष्ट्र-गीत, वंदे-मातरम एवं राष्ट्र-गान, जन-गण-मन का सामूहिक गायन हुआ। सामूहिक गायन में सीईओ जिला पंचायत संजना जैन, अपर कलेक्टर स्वप्निल वानखड़े, सभी एसडीएम सहित कलेक्ट्रेट के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत किया गया वृक्षारोपण

सतना निप्र। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के निर्देशानुसार जल गंगा संवर्धन अभियान को जारी रखते हुये सोमवार को नगर पालिका परिषद मैहर द्वारा सघन वृक्षारोपण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर अनुविभागीय अधिकारी मैहर विकास सिंह की उपस्थिति में पौधरोपण किया गया। इस दौरान सीएमओ मैहर लालजी ताम्रकार, सहायक यंत्री राहुल कुमार पटेल, सहायक यंत्री बीपी पाण्डेय, आकाश अग्रवाल एवं जनप्रतिनिधि और आमजनों ने बसोरन शमशान घाट में पौधारोपण कर अभियान में सहभागिता निभाई।

युवक की हत्या का पांचवां आरोपी गिरफ्तार

रीवा रोड पर चाकू मार कर ली थी जान, 7 और आरोपियों की तलाश जारी

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। रीवा रोड पर चाकू मार कर की गई युवक की हत्या के मामले में सतना पुलिस ने पांचवें आरोपी को गिरफ्तार किया है। इस हत्याकांड में अभी 7 और आरोपियों की तलाश जारी है।

कोलगवां थाना पुलिस ने रीवा रोड पर आईसीआईसीआई बैंक के पास 23 जून की रात हुई एडवोकेट कृष्ण कुमार पयासी के बेटे आशुतोष पयासी की हत्या के मामले में एक और आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। पकड़े गए आरोपी का नाम प्रदीप उर्फ प्रतीक मिश्रा (21) निवासी ग्राम पुरवा थाना सेमरिया जिला रीवा बताया गया है। आरोपी को पुलिस ने रीवा से गिरफ्तार किया है। इस हत्याकांड में यह पांचवीं गिरफ्तारी है।

इसके पहले अंकुल उर्फ कृष्णचंद त्रिपाठी पिता अशोक त्रिपाठी (25), प्रशांत उर्फ प्रांशु पिता अरुणेश मिश्रा (20), एएसआई संतोष तिवारी के पुत्र शुभम तिवारी (25) एवं हिमांशु तिवारी पिता रज्जन तिवारी (20) को पहले ही बंदी बनाया जा चुका है।

गौरतलब है कि 23 जून की रात अंकुल त्रिपाठी ने अपने साथ हुए विवाद का बदला लेने के लिए योजनाबद्ध तरीके से अपने साथियों के साथ मिलकर आशुतोष पयासी को रीवा रोड पर बुलाया था। यहां उस पर चाकू से हमला किया गया जिससे उसकी रीवा में इलाज के दौरान मौत हो गई। इस वारदात को अंजाम देने के लिए अंकुल ने जो योजना बनाई थी उसके तहत वह ट्रेन में चढ़कर सतना से दिल्ली रवाना हो गया था लेकिन रास्ते से उतर कर वापस सतना आ गया था। वारदात के बाद वह रीवा भाग गया था। मृतक और अंकुल के बीच 4 फरवरी को झगड़ा हुआ था।

नये कानूनों के प्रचार रथ को कलेक्टर और एसपी ने दिखाई हरी झंडी

मीडिया ऑडीटर, सतना निप्र। समूचे देश व प्रदेश के साथ सतना जिले के लिये भी एक जुलाई का दिन ऐतिहासिक बना है। भारतीय नागरिकों को संविधान में दिए गए सभी अधिकारों की रक्षा और उन्हें न्याय दिलाने के लिये तीन नए कानून इस दिन से सतना जिले में भी लागू हो गए हैं। कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी अनुराग वर्मा और पुलिस अधीक्षक आशुतोष गुप्ता ने सोमवार को नए कानूनों पर आधारित प्रचार रथ को पुलिस अधीक्षक कार्यालय सिविल लाईन सतना से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। यह प्रचार रथ जिले के क्षेत्रों में भ्रमण कर आमजनों को नये कानून के बारे में जागरुक करेगा। इस अवसर पर एएसपी शिवेश सिंह बघेल, पुलिस अधिकारी, अधिवक्तागण एवं आमजन उपस्थित रहे।

कलेक्टर अनुराग वर्मा ने कहा कि अंग्रेजों के जमाने से चले रहे कानून के प्रावधानों को समाप्त किया गया है। हम सब भारतवासियों के लिये यह एक ऐतिहासिक दिन है। नई न्याय संहिता के लागू होने से समय पर लोगों को न्याय मिलेगा। कलेक्टर ने कहा कि कई नई धारा जोड़ी गई है और कुछ हटाई गई है। जीरो एफआईआर और ई-एफआईआर का प्रावधान किया गया है। सुरक्षा के साथ न्याय दिलाने पर ज्यादा फोकस किया गया है।

पुलिस अधीक्षक आशुतोष गुप्ता ने कहा कि देशभर में आज (1 जुलाई) से भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की जगह भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस), क्रिमिनल प्रोसीजर कोड की जगह भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (बीएनएसएस) और एविडेंस एक्ट की जगह भारतीय साक्ष्य अधिनियम (बीएसए) लागू हो चुका है। जिन पुराने अधिनियमों में बदलाव किया गया है, उनमें भारतीय दंड संहिता 1860, दंड प्रक्रिया संहिता (1898), 1973 और भारतीय साक्ष्य अधिनियम 1872 शामिल हैं। भारतीय दंड संहिता 1860 के स्थान पर भारतीय न्याय संहिता विधेयक 2023 को लागू किया गया है। इसी तरह दंड प्रक्रिया संहिता 1898 को भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता विधेयक 2023 द्वारा प्रतिस्थापित किया गया है। भारतीय साक्ष्य अधिनियम 1872 के स्थान पर भारतीय साक्ष्य विधेयक 2023 लागू किया गया है। तीनों नए कानून एक जुलाई से प्रभावशील हो गए हैं।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया प्रकाशन रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय प्रभात बिहार कॉलोनी सतना से प्रकाशित, संपादक संदीप द्विवेदी आर.एन.आई नं.एमपीएचआईएन/2021/81683
प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9407132714, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार, सभी विवादो का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।